पश्चिम मध्य रेलवे
मुख्यालय, जबलपुर

राजभाषा सरिता

वर्ष – 2025 अंक – 53 जनवरी – मार्च

संपादकीय

संपादक की कलम से ....

पश्चिम मध्य रेलवे, मुख्यालय, राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका " राजभाषा सरिता" का 53 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। "राजभाषा सरिता" का यह अंक हमारे रेल परिवार को समर्पित करते हुए हमें अत्यंत खुशी हो रही है। हमारा सदैव प्रयास रहा है कि "राजभाषा सरिता" का प्रत्येक अंक सुधी पाठकों की अपेक्षा व आकांक्षाओं पर खरा उतरे ।

हिंदी भाषा केवल संवाद का साधन नहीं वरन यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं पहचान का प्रतीक है। इस विभागीय राजभाषा पत्रिका को प्रकाशित करने का उद्देश्य रेलवे में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों तथा उनके परिवारजनों के बीच लेखन प्रतिभा को उजागर करना है। जिससे राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान कर रेल कार्यालयों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग किया जा सके।

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन व अनुपालन प्रभावी रूप से हो, इसका एक मात्र उपाय है कि रेल कर्मियों के हृदय में राजभाषा के प्रति लगाव, निष्ठा और प्रेम का भाव जाग्रत किया जाय ताकि स्वाभाविक रूप से निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किए जा सकें। राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य राजभाषा विभाग के प्रमुख दायित्वों में से एक है। इसका मुख्य उद्देश्य संघ की राजभाषा नीतियों के अनुरूप सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करना तथा गृहमंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

इस अंक में हमने विभिन्न विषयों पर रोचक लेख, कथा, कहानी, व्यंग्य, गज़ल तथा कविताएँ आदि को संकलित कर विशेष रूप से समावेश किया है। साथ ही इसमें राजभाषा के अतिरिक्त पश्चिम मध्य रेलवे की विभिन्न गतिविधियों की झलकियों को भी प्रकाशित किया गया है। इस अंक में शामिल रचनाओं के बारे में अपने विचार हमसे जरूर साझा करें। इससे रचनाकारों का मनोबल बढ़ेगा और पत्रिका को और बेहतर बनाने में हमें मदद मिलेगी ।

हम अपने सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और सुधी पाठकों से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएँ ।

(संतलाल मर्सकोले)
राजभाषा अधिकारी
मुख्यालय/जबलपुर

राजभाषा सरिता

अंक - 53 | वर्ष - 2025 | जनवरी- मार्च

संरक्षक
श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय
महाप्रबंधक

✦

मार्गदर्शक
मनोज कुमार गुप्ता
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक

✦

परामर्श
प्रज्ञेश निंबालकर
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
उप मुख्य संरक्षा अधि. (यांत्रिक)

✦

संपादक
संतलाल मर्सकोले
राजभाषा अधिकारी

✦

कार्यकारी संपादक
राकेश कुमार मालवीय
वरिष्ठ अनुवादक

✦

सहयोग
राजभाषा विभाग

✦

पत्राचार का पता
संपादक
राजभाषा सरिता
महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग
पश्चिम मध्य रेलवे, इंदिरा मार्केट
जबलपुर (म.प्र.)-482 001
मोबाइल : 97524 15614, 77010 82680
e-mail: rajbhashawcrhq@gmail.com

• सीमित संख्या में नि:शुल्क वितरण के लिए
• पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं ।

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
1.	नया पंबन ब्रिज : विरासत से आधुनिकता तक (लेख)	03
2.	खंडित प्रण (कविता)	04
3.	रेल व्यवस्था में नैतिकता और सतर्कता	05
4.	संरक्षा	07
5.	मातृ-ऋण (लेख)	09
6.	सामाजिक दृश्य (कविता)	10
7.	कुछ नीति कुछ राजनीति (पुस्तक समीक्षा)	11
8.	तुम्हारा वट (कविता)	14
9.	काश (लेख)	15
10.	मन (कविता)	16
11.	वक्त दम तोड़ देते हैं (कविता)	16
12.	पुश्तैनी घर (कहानी)	17
13.	गज़ल	17
14.	लघु कथाएं	18
15.	बेशर्माई तेरा आसरा (व्यंग्य)	19
16.	गज़लें	21
17.	हिंदी हमारी वंदगी (कविता)	22
18.	मेरी जिंदगी (कविता)	22
19.	अनुशासन (कहानी)	23
20.	मैं सूरज हूँ (कविता)	24
21.	संस्कारों की छवि (लेख)	25
22.	महाकुंभ और रेल (कविता)	25
23.	वीर शहीद (कविता)	26
24.	रेलों से पर्यटन (कविता)	26
25.	अतिथि देवो भवः (लेख)	27
26.	छोटू की संघर्ष गाथा (कहानी)	28
27.	गज़ल आत्म अभिव्यक्ति का माध्यम (लेख)	29
28.	गर्मी की छुट्टी (कविता)	31
29.	चांदनी के राहगीर (लेख)	32
30.	वह शख्स (कविता)	36
31.	पर्यटन के झरोखे में (कविता)	37
32.	तेरा मेरा बहुत हो चुका (कविता)	38
33	कांठ की माया (कविता)	38
34.	छायाचित्र वीथिका	39

कर्नल सोफिया कुरैशी

कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है
जग को जीवन देने वाली, मौत भी तुझसे हारी है....

विंग कमांडर व्योमिका सिंह

गौरव के पल

श्री संजीव तिवारी, मु.सिग. एवं दू. इंजी. (योजना एवं अभिकल्प), पमरे को
रेल मंत्री राजभाषा रजत पदप एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित करते हुए
श्री सतीश कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय)

श्री संजीव तिवारी, मु.सिग.एवं दू. इंजी. (योजना एवं अभिकल्प),पमरे को
रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता (राजपत्रित वर्ग) में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित करते हुए
श्री सतीश कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय)

लेख

नया पंबन ब्रिज : विरासत से आधुनिकता तक

नया पंबन ब्रिज भारत की इंजीनियरिंग क्षमता और दूरदर्शी बुनियादी ढांचे के विकास का एक प्रमाण है। इतिहास में निहित, इसकी कहानी 1914 की याद दिलाती है जब ब्रिटिश इंजीनियरों ने मूल पंबन ब्रिज का निर्माण किया था, जो रामेश्वरम द्वीप को भारत की मुख्य भूमि से जोड़ने के लिए शेरजर रोलिंग लिफ्ट के साथ एक कैंटिलीवर (धातु या लकड़ी का एक लंबा टुकड़ा जो पुल के अंतिम छोर को सहारा देने के लिए दीवार से फैला होता है) संरचना है। मूल पम्बन ब्रिज अपने समय की एक उपलब्धि थी। यह तीर्थयात्रियों और व्यापारियों को रामेश्वरम के पवित्र द्वीप से जोड़ने वाली गौरवशाली जीवन रेखा के रूप में खड़ा था लेकिन वर्षों से, समय और ज्वार ने इसे खत्म कर दिया। कठोर समुद्री परिस्थितियों, तेज हवाओं और नमक से भरी हवाओं ने इसे अपनी उम्र की सीमाओं से पार तक धकेल दिया।

तभी एक नए, मजबूत और स्मार्ट पुल के विचार ने जन्म लिया। इस पुल को स्टेनलेस स्टील के सुदृढ़ीकरण, उच्च-ग्रेड सुरक्षात्मक पेंट और पूरी तरह से वेल्डेड जोड़ों का उपयोग करके बनाया गया है। इसे जंग से बचाने के लिए पॉलीसीलोक्सेन कोटिंग प्रदान की गई है। पुल को भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए दोहरी रेल पटरियों और भविष्य के विस्तार के लिए डिजाइन किया गया है। यह ब्रिज रामेश्वरम द्वीप और मुख्य भूमि के बीच आवश्यक रेल संपर्क प्रदान करता है। पुराने पुल से लगभग 27 मीटर उत्तर में अब इसका छोटा, शक्तिशाली समकक्ष पुल खड़ा है, जो समुद्र में 2.07 किलोमीटर तक फैला हुआ है। लगभग 700 करोड़ रूपये से अधिक की लागत से निर्मित इस पुल को जो चीज वास्तव में खास बनाती है, वह है इसका 72.5 मीटर लंबा वर्टिकल लिफ्ट स्पैन, जो भारतीय रेलवे के लिए एक विशिष्ट उपलब्धि है। इसका मतलब है कि जब कोई जहाज गुजरना चाहता है, तो पुल का केंद्रीय भाग 17 मीटर ऊपर उठ सकता है, जिससे जहाज आसानी से गुजर सकते हैं। यह पुल के एक टुकड़े को आसमान में तैरते हुए देखने जैसा है। हालांकि, इसे बनाना आसान नहीं था। इंजीनियरों को अशांत जल, मुश्किल हवाओं और समुद्र तल से निपटना पड़ा, जिसने हर गणना का परीक्षण किया। सामग्री को अत्यधिक सावधानी से भेजा गया, वेल्ड किया गया और उठाया गया। नया पुल न केवल स्मार्ट है, बल्कि टिकाऊ भी है। इसकी नींव 330 से अधिक विशाल पाइल्स से गहरी रखी गई है, फ्रेम स्टेनलेस स्टील सुदृढीकरण से बना है और नमकीन हवा से बचने के लिए इसे विशेष समुद्री प्रतिरोधी कोटिंग्स के साथ संवारा गया है।

नए पम्बन ब्रिज की भव्यता के पीछे, चुपचाप काम करने वाली स्मार्ट तकनीक छिपी हुई है। थ्री-कप एनीमोमीटर लगातार हवा की गति पर नजर रखता है। यदि यह 58 किमी प्रति घंटे से अधिक हो जाती है, तो यह स्वचालित लाल सिगनल को ट्रिगर करता है, सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ट्रेनों को रोक देता है। इस बीच, समुद्र में नियंत्रण कक्ष में, वायुमंडलीय जल जनरेटर साइट पर मौजूद कर्मचारियों के लिए हवा की नमी को स्वच्छ पेयजल में परिवर्तित करता है। साथ में, ये नवाचार चुपचाप जीवन की रक्षा करते हैं और पुल का संचालन करने वाले लोगों का संरक्षण करते हैं।

नया पंबन ब्रिज सुनिश्चित करेगाः-

1) **बेहतर परिवहनः** भारी रेल यातायात और तेज ट्रेनों को समायोजित करना।

2) **समुद्री एकीकरणः** बड़े जहाजों को बिना किसी व्यवधान के गुजरने की अनुमति देना।

3) स्थायित्व: न्यूनतम रखरखाव के साथ 100 से अधिक वर्षों का जीवनकाल सुनिश्चित करना आदि।

पर्यावरण, रसद और तकनीकी चुनौतियों को पार करते हुए, यह अत्याधुनिक वर्टिकल लिफ्ट रेलवे ब्रिज देश की बढ़ती बुनियादी ढांचा क्षमताओं का एक गौरवान्वित करने वाला प्रमाण है। अपने आधुनिक डिजाइन, बेहतर सुरक्षा सुविधाओं और स्थिरता की प्रतिबद्धता के साथ, यह पुल न केवल एक महत्वपूर्ण परिवहन लिंक को पुनर्जीवित करता है, बल्कि क्षेत्रीय संपर्क और आर्थिक विकास को भी मजबूत करता है। जब ट्रेनें और जहाज बिना किसी परेशानी के ऊपर से गुजरने के लिए तैयार होते हैं, तो यह पुल हमें याद दिलाता है कि "जब लक्ष्य और दृढ़ संकल्प एक साथ मिल जाते हैं, तो क्या हासिल किया जा सकता है"। तो अगली बार जब आप उस ट्रेन में सवार हों, तो समुद्री हवा को अपने साथ एक पल के लिए चिंतन में ले जाने दें। जब आप "नए पम्बन ब्रिज को पार करते हैं, तो आप सिर्फ पानी के ऊपर नहीं चल रहे होते हैं, आप समय, विरासत और नवाचार से गुजर रहे होते हैं"। लहरों के नीचे एक सदी की कहानियाँ छिपी हैं, और उनके ऊपर भारत के भविष्य का वादा। यह पुल सिर्फ "इंजीनियरिंग का चमत्कार नहीं है- यह यात्रियों, संस्कृति और सपनों को जोड़ता है"। अपनी खामोश ताकत और सुंदर उभार में, यह हमें याद दिलाता है कि प्रगति सिर्फ नए निर्माण के बारे में नहीं है, बल्कि पुराने का सम्मान करना और उसे गर्व के साथ आगे ले जाना भी है।

दिनांक 6 अप्रैल 2025 को श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री भारत सरकार ने रामनवमीं के अवसर पर रामेश्वर द्वीप और मुख्य भूमि को जोड़ने वाले इस नये पंबन पुल का विधिवत उद्घाटन कर राष्ट्र को समर्पित किया जो आत्मनिर्भर भारत और गौरव का प्रतीक है।

संजीव तिवारी
मुख्य संकेत एवं दूरसंचार इंजी.
(योजना एवं डिजाइन)
मुख्यालय,पमरे, जबलपुर
मो. 9752415807

कविता

खंडित प्रण

प्रण किया था मैंने इक दिन,
नहीं करूंगा मोह।
बिसार दूंगा सबको,
सब कुछ चाहे कुछ भी हो।

मोह विष है जीवन का,
जीना सीमित करता है।
दे कर जीना है,
जीवन अमृत करता है।

प्रकार कई है उस जोर का,
कहते जिसको हम इच्छाई।
जब मोह नहीं है जीवन में,
तो करता हूँ क्यों प्रतिक्षा ?

प्रतिक्षा एक चाह है,
और है मोहे का एक स्वरुप ।
पर मरू है जीवन, बिना
इसके लगता कुरूप।

है प्रतिक्षा कल की सुंदर,
स्वस्थ और कचंना ।
पूर्ण हो, मेरा यह भारतवर्ष,
है बस यही मेरी अर्चना ।

स्नेहसिक्त समद्धि और अनुशासन का,
कैसे कहुँ की आस नहीं है।
मैं रहता जिस पर वह,
धरती है आकाश नहीं है।

मोह है, प्रीत है मुझे,
मेरे अपनों के संग ।
तोड़ते लोग क्या नहीं ? इनके लिए,
मेरा तो बहस, प्रण हुआ है भंग।

प्रभाकर भूषण
वरिष्ठ अनुवादक
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 7987821908

भारतीय भाषाएं नदियां है और हिंदी महानदी – गुरुदेव टैगोर

लेख

रेल व्यवस्था में नैतिकता और सतर्कता पारदर्शिता की पटरी पर यात्रा : एक परिचय

जरा कल्पना कीजिए कि एक इंजन बिना तेल और देखरेख के चल रहा है– कितनी दूर जाएगा ? ज्यादा नहीं, जल्दी ही पटरी से उतर जाएगा। ठीक वैसे ही, भारतीय रेल जैसी विशाल संस्था बिना नैतिकता के तेल और सतर्कता की देखरेख के ठीक से नहीं चल सकती। हर दिन करोड़ों यात्रियों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने वाली यह संस्था सिर्फ परिवहन नहीं, देश की जीवन रेखा है। लेकिन जहाँ ताकत होती है, वहाँ जोखिम भी होता है–भ्रष्टाचार, लापरवाही और बेईमानी का।

अगर हम चाहते हैं कि रेल सही दिशा में दौड़े, तो हर रेलकर्मी को नैतिक मूल्यों और सतर्कता के सिद्धांतों को अपनाना होगा फिर चाहे वह टीटीई हो या जीएम। यह लेख सरल भाषा में बताएगा कि कैसे हर रेलकर्मी एक ईमानदार प्रणाली का हिस्सा बन सकता है और कैसे भ्रष्टाचार से रेल को बचाया जा सकता है।

नैतिकता: अंतरात्मा का सिगनल –रेलवे में नैतिकता का मतलब सिर्फ ईमानदारी नहीं, बल्कि सही समय पर सही निर्णय लेना है–भले ही कोई देख रहा हो या नहीं। जैसे रेल का सिगनल ट्रेन को सही दिशा दिखाता है, वैसे ही नैतिकता हमें जीवन में गलत से बचाती है। जब कोई ठेकेदार 'चाय–पानी' ऑफर करे या कोई ट्रांसफर के लिए 'रिश्वत' दे, तो नैतिकता की असली परीक्षा होती है। पर याद रखिए, भ्रष्टाचार तात्कालिक लाभ देता है लेकिन दीर्घकालिक नुकसान भी होता है, परिणामस्वरूप सम्मान, नौकरी और आत्म–सम्मान सब खत्म हो सकता है।

ध्यान रखें: नैतिकता के बिना रेलकर्मी, बिना ब्रेक की ट्रेन जैसा है–देखने में तेज, पर अंत में टक्कर ही मारेगा।

सतर्कता: डर नहीं, दिशा है – सतर्कता विभाग को लोग अक्सर डर से जोड़ते हैं–जैसे कोई जासूसी कर रहा हो लेकिन सतर्कता का काम लोगों को फंसाना नहीं, बल्कि संस्था को बचाना है। यह निवारक, अन्वेषक और सुधारक तीनों भूमिकाएं निभाता है। जैसे फिटनेस के लिए नियमित जाँच जरूरी होती है, वैसे ही संस्था की सेहत के लिए सतर्कता आवश्यक है। यह प्रणाली की कमियां बताता है, सुधार के सुझाव देता है और जरूरत पड़ने पर कार्रवाई भी करता है। सतर्कता को शत्रु मत समझिए यह आपका सुरक्षा कवच है।

रेलवे में आम नैतिक गिरावट के उदाहरण – रेलवे में कुछ व्यवहार इतने आम हो गए हैं कि लोगों को उनमें गलत कुछ नहीं लगता जैसे –

1. **'फर्जी टीए/डीए बिल: 'सब करते हैं यार!'**– यही सोच पूरी व्यवस्था को खोखला करती है।
2. **पास का दुरुपयोग**– परिवार के लिए बना पास अगर किसी दोस्त के कुते के वॉकर को दे रहे हैं, तो ये मदद नहीं, बेईमानी है।
3. **टेंडर फिक्सिंग**– अगर किसी ठेकेदार को इसलिए काम मिल रहा है कि उसने आपको गोवा ट्रिप दी थी, तो आपको शर्म आनी चाहिए।
4. **काम में देरी कर रिश्वत लेना**– फाइल को जानबूझकर अटकाना ताकि सामने वाला 'समझ' जाए–ये कार्य नहीं, भ्रष्टाचार है।
5. **फर्जी हाजिरी**– अगर आपकी हाजिरी बता रही है कि आप ड्यूटी पर हैं, लेकिन आप पिकनिक मना रहे हैं तो ये चोरी है। ये छोटे 'समायोजन' नहीं, ये दीमक हैं– जो ईमानदारी और भरोसे की नींव को चाट रहे हैं।

एक आदर्श रेलकर्मी बनने के सूत्र– नैतिक बनने के लिए आपको गांधीजी बनना जरूरी नहीं, बस ये करें:

1. **पारदर्शिता अपनाएं:** काम का हर फैसला साफ–सुथरा रखें।
2. **'ना' कहना सीखें:** जब कोई रिश्वत ऑफर करे, तो विनम्र बनें लेकिन दृढ़ता से इंकार करें।
3. **दस्तावेज साफ रखें:** जो लिखा है वही सच है, बाद में यही आपका बचाव करेगा।
4. **गलत को पहचानें और आवाज उठाएं**– गलत को गलत कहने का साहस रखें।
5. **दूसरों के लिए उदाहरण बनें**– अपने कार्य के प्रति निष्ठा, समर्पण और ईमानदारी से दूसरों के लिए उदाहरण बनें।

अधिकारी और पर्यवेक्षकों की भूमिका- एक अच्छा अधिकारी सिर्फ आदेश नहीं देता, दिशा दिखाता है। अगर आप टीम लीडर हैं तो -

- नैतिकता पर नियमित चर्चा करें।
- ईमानदार कर्मियों को सराहें।
- हर निर्णय को दस्तावेज में स्पष्ट करें।
- कर्मचारियों की बात सुनें और उन्हें बोलने का मौका दें।
- सख्त बनिए लेकिन समझदार और संवेदनशील भी बनिए।
- सतर्कता को अभियान बनाइए।
- सतर्कता विभाग सिर्फ फाइलें न संभाले, संस्था में ईमानदारी का उत्सव मनाए।
- नाटक, पोस्टर, प्रश्नमंच, डिबेट और मीम्स के जरिये सतर्कता जागरूकता सप्ताह को रोचक बनाएं।
- ओपन हाउस बैठकें करें जहाँ कर्मचारी खुलकर बोल सके।
- IntegritYk pledge को हर महीने याद करें और अपनाएं।
- सुझाव पेटी लगाएं (ऑनलाइन और ऑफलाइन), जिससे स्टाफ सुधार के विचार साझा कर सकें।
- डर से नहीं, प्रेरणा से ईमानदारी आएगी।
- भ्रष्टाचार के परिणाम: अंत में सब पकड़े जाते हैं।

अगर नैतिकता और सतर्कता अभी भी 'बोरिंग' लग रही है, तो इसके परिणामों पर ध्यान दीजिए-

- नौकरी से निलंबन और बर्खास्तगी।
- कानूनी केस और जेल की सजा।
- समाज में बदनामी और परिवार की नजरों में गिरना।
- पेंशन और अन्य लाभों का नुकसान।
- सबसे बड़ा नुकसान-हर समय पकड़े जाने का डर क्या थोड़े से फायदे के लिए इतना बड़ा जोखिम लेना समझदारी है? ईमानदार लोग भले अरबपति न बनें, पर चैन की नींद जरूर सोते हैं।

भविष्य की रेलवे: डिजिटल, नैतिक, मजबूत-आज रेलवे बदल रही है- डिजिटल हो रही है, तेज हो रही है। लेकिन सबसे जरूरी बदलाव होगा संस्कारों का बदलाव। टेक्नोलॉजी तभी असरदार है जब इंसान सच्चा हो।

आइए एक ऐसी रेलवे की कल्पना करें जहां हर कर्मचारी गर्व से कहे- मैं बेईमानी से नहीं डरता, मैं बेईमानी करता ही नहीं। यह सपना है, पर असंभव नहीं। बस हमें एक साथ सोचना होगा-नैतिकता की दिशा में।

अंतिम शब्द- नैतिकता कोई अतिरिक्त काम नहीं, वही असली काम है नैतिकता ऑफिस का एक कॉलम नहीं, बल्कि काम का आधार है। सतर्कता कोई रुकावट नहीं, बल्कि सुरक्षा कवच है।

तो आइए संकल्प लें:

- अपनी शक्ति और पद का दुरुपयोग नहीं करेंगे।
- ईमानदारी को बोझ नहीं, सम्मान मानेंगे।
- नैतिकता और सतर्कता को आदत बनाएंगे, इवेंट नहीं।
- क्योंकि जब हर रेलकर्मी ईमानदारी से काम करेगा, तो रेलवे सिर्फ दूरी नहीं, देश की गरिमा भी तय करेगी।

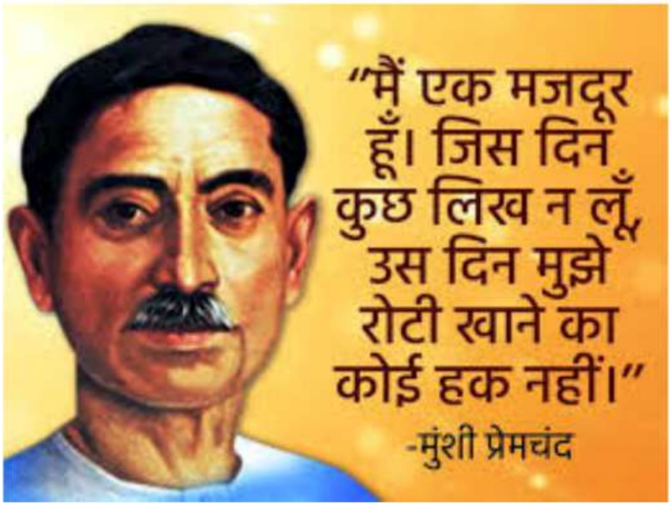

धनराज सिंह
उप मुख्य सतर्कता अधिकारी/यातायात
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 9752415033

हिंदी द्वारा समस्त भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है - स्वामी दयानंद सरस्वती

लेख

संरक्षा

संरक्षा को सामान्यतः सुरक्षा के अर्थ में लिया जाता है परन्तु संरक्षा का अर्थ सुरक्षा से अधिक व्यापक होता है। सुरक्षा का अर्थ जहाँ किसी भी तरह के संकट या नुकसान से स्वयं को या अपने सामान को सुरक्षित रखना होता है वहीं संरक्षा का अर्थ होता है लोगों या किसी संगठन को नुकसान या किसी अवांछनीय परिणाम से बचाव या सुरक्षा। यह शब्द, सुरक्षा के संदर्भ में, दुर्घटनाओं, खतरों या नुकसान से बचने के लिए किए गए उपायों को दर्शाता है। संरक्षा के अर्थ को निम्न बिंदुओं से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है –

- **बचावः** नुकसान या खतरे से बचना।
- **सुरक्षाः** सुरक्षित रहने की स्थिति या उपाय।
- **देखभालः** किसी चीज या व्यक्ति की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- **संरक्षणः किसी चीज को नुकसान से बचाना-** रेलवे में संरक्षा को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। रेलवे का प्रतीक ही है 'संरक्षा, सुरक्षा तथा समय पालन।' रेलवे भारत में परिवहन का सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय साधन है। यह यात्रा के लिए सबसे सुरक्षित साधन माना जाता है है। जनमानस में इसके प्रति सुरक्षा का विश्वास ही इसे दिन प्रतिदिन नई ऊँचाई प्रदान कर रहा है। यदा कदा घटने वाली कुछ घटनाओं को छोड़ कर यह सुरक्षित यात्रा के साथ-साथ सुरक्षित माल परिवहन के दायित्व का निर्वहन करने में भी सफल रहा है।

रेलवे में 'संरक्षा' (Safety) का मतलब है, रेल परिवहन से जुड़े सभी पहलुओं में सुरक्षा सुनिश्चित करना, जिससे यात्रियों, कर्मचारियों और रेलवे संपत्ति की सुरक्षा हो सके। रेलवे में संरक्षा से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण पहलू जिनका पालन कर संरक्षा को सुदृढ़ किया जा सकता है। जैसे

1. यात्रियों की सुरक्षा :-

- ट्रेन में चढ़ते और उतरते समय प्लेटफॉर्म का उपयोग करें।
- चलती ट्रेन में चढ़ने या उतरने से बचें।
- रेलवे ट्रैक पैदल पार करने से बचें, हमेशा फुटओवर ब्रिज का उपयोग करें।
- धूम्रपान और शराब का सेवन न करें और ट्रेन के पायदान पर खड़े होकर या बैठकर यात्रा न करें।
- अनजान व्यक्ति से खाने-पीने की वस्तु न लें या न दें।
- रात में कोच का दरवाजा बंद रखें और सतर्क रहें।
- चेन या मोबाइल स्नैचिंग से बचने के लिए विंडो बर्थ के पास यात्रा करते समय सतर्क रहें।

2. रेलवे कर्मचारियों की सुरक्षाः-

- रेलवे कर्मचारियों को नियमित रूप से सुरक्षा प्रशिक्षण दिया जाता है।
- कर्मचारी सुरक्षा नियमों और प्रक्रियाओं का पालन करें।
- खराब रखरखाव और शॉर्टकट लेने से बचें।

3. रेलवे संपत्ति की सुरक्षाः-

- रेलवे ट्रैक, सिगनल और अन्य बुनियादी ढांचे की नियमित रूप से जांच की जाती है।
- दुर्घटनाओं से बचने के लिए खराब ट्रैक ज्यामिति, क्षतिग्रस्त या दोषपूर्ण स्विच और क्रॉसिंग, व्हील-रेल इंटरफेस में घिसाव और थकान, वाहन सस्पेंशन दोष से संबंधित तकनीकी विफलताओं को ठीक किया जाता है।

रेलवे में संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कई संगठन विभिन्न स्तरों पर कार्यरत है परंतु सबसे महत्वपूर्ण साधन है सजग एवं प्रशिक्षित कर्मचारी। कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए रेलवे के हर विभाग के कर्मचारियों को कठिन प्रशिक्षण दिया जाता है। समय-समय पर रेलवे में हो रहे विभिन्न परिवर्तनों की जानकारी भी विभिन्न साधनों द्वारा उन्हें दी जाती है। सतर्क एवं नियमों से कार्य करने वाला कर्मचारी रेल संरक्षा का सर्वोत्तम साधन होता है। संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रेलवे ने कई संगठनों का गठन किया है जिसमें रेलवे सुरक्षा बल (RPF) और राजकीय रेलवे पुलिस (GRP) यात्रियों की जान-माल की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं, तो रेलवे सुरक्षा आयोग (CRS) रेल संचालन की सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर काम करता है। इसके अतिरिक्त रेलवे में एक सुरक्षा विभाग भी कार्य करता है जो सुरक्षा से संबंधित मामलों पर अपनी सलाह देता है और कर्मचारियों को सर्तकता एवं नियम से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है – महात्मा गांधी

रेलवे सुरक्षा बल (RPF) :-

- यह रेलवे संपत्ति और यात्रियों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है
- यह रेलवे परिसर में प्रवेश को नियंत्रित करता है और यात्रियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले परिसरों का विनियमन करता है।
- रेलवे यातायात के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करता है।
- यह चलती ट्रेनों पर पत्थरबाजी, ज्वलनशील पदार्थ ले जाना जैसी दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों को रोकने के लिए 'ऑपरेशन संरक्षा' चलाता है।
- आप सुरक्षा से संबंधित किसी भी समस्या के लिए 182 डायल कर सकते हैं या ट्विटर के माध्यम से शिकायत कर सकते हैं।

राजकीय रेलवे पुलिस (GRP) :-

- यह रेल यात्रियों एवं उनकी संपत्ति की सुरक्षा में RPF के साथ मिलकर काम करती है।

रेलवे सुरक्षा आयोग (CRS) :-

- रेल संचालन की सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर काम करता है।
- यह रेल अधिनियम (1989) में निर्धारित कुछ वैधानिक कार्यों का प्रभार रखता है।
- यह सुनिश्चित करता है कि यात्री यातायात के लिए आरंभ होने वाली कोई नई लाइन यात्री यातायात के वहन के हर दृष्टिकोण से सुरक्षित है।
- यह गंभीर रेल दुर्घटनाओं की जांच करता है और भारत में रेल की सुरक्षा में सुधार के लिए सिफारिशें करता है। इसके अलावा अन्य कई प्रकार से रेलवे ने अपने यात्रियों को संरक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है जैसे –

सुरक्षा हेल्पलाइन –

- यात्रा के दौरान सुरक्षा सहायता प्राप्त करने के लिए सुरक्षा हेल्पलाइन टोल फ्री नंबर 182 प्रदान किया गया है।

संरक्षा मोबाइल ऐप –

- रेलवे ने यात्रियों की सुरक्षा के लिए 'संरक्षा' मोबाइल ऐप लाँच किया है। इस ऐप का उद्देश्य भारतीय रेलवे के फ्रंटलाइन सुरक्षा श्रेणी के कर्मचारियों की क्षमता निर्माण करना है।

कवच प्रणाली–

- राष्ट्रीय रेल संरक्षा कोष (RRSK)।
- मानव रहित लेवल क्रॉसिंग समाप्त करना।
- GPS आधारित कोहरा सुरक्षा उपकरण।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर रेलवे द्वारा जागरूकता अभियान चलाया जाता है जो संरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास करता है स्टेशनों पर उद्घोषणा द्वारा यात्रा में सर्तकता बरतने की सलाह दी जाती है। रेलवे में संरक्षा के लिए अपनाए गए उपायों से दुर्घटनाओं में और अधिक कमी, यात्रियों और कर्मचारियों की सुरक्षा और रेलवे की विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है, जिससे आर्थिक और सामाजिक लाभ भी मिला हैं। रेलवे में अपनाए गए संरक्षा उपायों से हमें निम्न उपलब्धि प्राप्त हुई है।

दुर्घटनाओं में कमी – रेलवे में सुरक्षा उपायों के कारण दुर्घटनाओं की संख्या में काफी कमी आई है।

यात्रियों और कर्मचारियों की सुरक्षा – संरक्षा उपायों से यात्रियों और कर्मचारियों की जान और सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

रेलवे की विश्वसनीयता में वृद्धि – सुरक्षित यात्रा का अनुभव यात्रियों का विश्वास बढ़ाता है और रेलवे की छवि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

आर्थिक लाभः–दुर्घटनाओं में कमी से होने वाले नुकसान, जैसे संपत्ति का नुकसान और मुआवजा भुगतान आदि कम हो जाते हैं, जिससे आर्थिक रूप से लाभ होता है और रेल राजस्व की बचत होती है।

सामाजिक लाभः–सुरक्षित रेलवे यात्रा से लोगों को यात्रा करने में आसानी होती है, जिससे सामाजिक रूप से भी लाभ होता है.

अतः हम सभी रेल कर्मचारियों और यात्रियों के साथ साथ पूरे समाज का भी दायित्व है कि हम सभी मिलकर रेलवे की संरक्षा को सुनिश्चित करे ।

हमें लेना है यह संकल्प ।
संरक्षा का कोई नहीं है विकल्प।।

प्रभात कुमार झा
स्टेशन प्रबंधक
न्यू कटनी जंक्शन, जबलपुर मंडल
मो. 8770646969

लेख

मातृ-ऋण

...शाम से ही लगातार बारिश हो रही है। मैं नाइट-ड्यूटी पर हूँ। रात के करीब साढ़े दस बज रहे हैं। ड्यूटी का चार्ज लेने के बाद मैंने आई.सी.यू.और दूसरे वार्डों का राउंड लिया है। लौटकर डॉक्टर्स ड्यूटी रूम में बैठी सोच रही हूँ खाना खा कर थोड़ा लेट लूँ। पता नहीं नाइट कैसी जाएगी ! ऐसे मौसम में यूँ तो पेशेंट्स कम ही रहते हैं लेकिन जो आते हैं वो गंभीर होते हैं। अपना टिफिन बाक्स मैंने खोला ही है कि ड्यूटी रूम का फोन बजता है। दूसरी तरफ कैजुअल्टी की सिस्टर हैं, 'मैडम, एक सीरियस पेशेंट है, जल्दी आ जाइये !' मैं जल्दी से अपना डिब्बा बंद करती हूँ और कैजुअल्टी की तरफ बढ़ जाती हूँ। आकस्मिकी विभाग के बेड पर पेशेंट को शिफ्ट किया जा रहा है। मैंने पहली नजर में ही अंदाजा लगा लिया है कि पेशेंट गंभीर अवस्था में है। बेड पर शिफ्ट होते ही सिस्टर बी.पी.रिकार्ड करती है 'मैडम, बी.पी.नहीं मिल रहा है।' मैं तुरंत पल्स देखती हूँ ,फीबल पल्स है। मैं सिस्टर को निर्देश देती हूँ ऑक्सीजन लगाइये, आई.वी.लाईन मेंटेन करिए और ई.सी.जी. निकालिये। फिर मैं उनके साथ आए अटेंडेंट की तरफ मुखातिब होती हूँ। करीब पैंतीस वर्ष का संभ्रांत व्यक्ति है, शायद बेटा है उनका। मैं पूछती हूँ 'क्या हुआ है ? आपके पास पुराने पेपर्स हैं तो दिखा दें।' वह मुझे पेशेंट की फाइल देता है। नाम सविता देवी, उम्र 72 वर्ष, रिटायर्ड रेलवे कर्मचारी की पत्नी हैं। पति के नाम के आगे स्वर्गीय लिखा है। क्रॉनिक रीनल फेल्योर की मरीज हैं। आखिरी 6 महीने का कोई ट्रीटमेंट रिकार्ड नहीं है।

मैंने शुरुआती इमरजेंसी मैनेजमेंट करके उन्हें आई.सी.यू.में शिफ्ट करने का आदेश दे दिया है। इस बीच में सिस्टर ने मेरे कहने पर लैब अटेंडेंट को बुलवा लिया है ताकि अर्जेंट इनवेस्टिगेशन हो जाए और हृदय रोग विशेषज्ञ को भी एक्सपर्ट ओपीनियन के लिये बुलवा लिया है। मैं शुरुआती निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि मायोकार्डियल इन्फार्क्शन (हृदयाघात) है और पेशेंट कार्डियोजेनिक शॉक में है। मैं सोचती हूँ उनके बेटे को वस्तुस्थिति से अवगत करा दूँ परन्तु वह आस पास नजर नहीं आता। पूछने पर पता चलता है बाहर अपनी पत्नी से विचार - विमर्श कर रहा है। तब मेरा ध्यान जाता है कि उसके साथ पत्नी और छः वर्ष की बेटी भी है। मैं कहती हूँ कि अपनी पत्नी को भी अंदर बुला लें किंतु वह कहता है कि पत्नी को हास्पिटल की गंध से चक्कर आते हैं। मैं उसे उसकी माँ की गंभीर स्थिति के बारे में बताती हूँ और कहती हूँ आपमें से कोई एक अटेंडेंट यहाँ रुक जाए। उसके चेहरे पर असमंजस और झल्लाहट के भाव स्पष्ट नजर आते हैं। 'मैडम, हमलोग यहाँ रुक नहीं पाएंगे, हम दोनों वर्किंग हैं, सुबह बिटिया का स्कूल भी है।' मैं हैरत से उस बेटे को देखती हूँ...ये बेटा है जिसके लिए उस माँ ने जाने कितनी रातें जाग के गुजारी होंगी।

'आपके यहाँ क्या नर्सिंग केयर नहीं होती जो हमें यहाँ रहने की जरूरत है' ! उसकी आवाज में व्यंग्य झलकता है। फिर वह आया बाई से कहता है 'आप यह रख लो और हमें छुट्टी दो।' उसने अपनी जेब से सौ-सौ रुपये के कुछ नोट निकाल कर बेड पर रख दिए हैं। उसके चेहरे पर दर्द झलक रहा है। हमारे लिए भी यह अप्रत्याशित था। आया बाई यहाँ की पुरानी स्टाफ हैं, तेज-तर्रार, मेहनती और बेबाक ! उनकी निष्ठा की वजह से डॉक्टर्स भी उनके प्रति सम्मान का भाव रखते हैं। आया बाई का चेहरा सख्त हो जाता है, कड़े शब्दों में बोलती हैं,'साहब जी, पैसे की गर्मी ना दिखाओ, हमें हमारे काम के लिये सरकार पूरे पैसे देती है। आपकी माँ की देख भाल हम वैसे ही कर लेंगे।'

बेटे का चेहरा बुझ गया है। ये वो पीढ़ी है जो यह समझती है कि दुनियां में हर चीज बिकाऊ है। थोड़ी देर असमंजस की स्थिति में खड़े रहने के बाद वह चला जाता है। बाहर से बिटिया बार-बार आवाज लगा रही है,तो उसे जाना ही पड़ता है। मैं वापस आईसीयू में जाती हूँ। पेशेंट अब भी अचेत हैं। सारे मॉनिटर्स लगे हुए हैं। इस स्थिति में भी उन्हें देखकर मैं यह सोचे बिना नहीं रह पाती कि बहुत स्नेही और ग्रेसफुल महिला रही होंगी ये। कार्डियोलॉजिस्ट ने आकर उन्हें देख लिया है, निर्देश लिख दिए हैं, डोपामाइन की ड्रिप चालू है। अब बी.पी. इम्प्रूव हो रहा है। हमने चैन की साँस ली है।

मैं वापस अपने कमरे में आ गई हूँ। रात के साढ़े बारह बज रहे हैं। मेरी अब खाने की इच्छा नहीं बची है। अपने ड्यूटी रूम के पलंग पर लेट गई हूँ और टी.वी. चला लिया है। मैं निरर्थक ही टी. वी. के चैनल बदल रही हूँ...एक चैनल पर सास-बहू वाले किसी सीरियल का रिपीट टेलिकास्ट दिखा रहे हैं। मुझे ये सीरियल्स पसंद नहीं फिर भी चलने देती हूँ। उस निस्तब्ध काली रात में टी. वी. की आवाज अच्छी लगती है। मन में एक खयाल आता है, बहुएँ ही दोषी क्यों होती हैं, बेटे क्यूँ नहीं !! दिमाग में उन पेशेंट के बेटे का झल्लाहट भरा चेहरा घूमता है। मैं एक बार फिर से सिस्टर को फोन करके उनकी स्थिति के बारे में जानकारी लेती हूँ। अभी स्टेबल हैं ये जानकर थोड़ी तसल्ली होती है। बीच में दो

एडमिशन और हुए हैं परन्तु गंभीर नहीं हैं। उन्हें वार्ड में भेज कर मैं वापस ड्यूटी रूम में आ जाती हूँ। चार बजे के आसपास मुझे झपकी लगती है। तभी आईसीयू की सिस्टर का फोन आता है 'मैडम छः नंबर पेशेंट सीरियस हैं, आप आ जाइए।' मैं वार्ड से होते हुए आईसीयू में पहुँचती हूँ क्योंकि ये शॉर्टकट रास्ता है। वो मरीज फिर से गैस्प कर रही हैं। लगता है एरिझिया (अनियमित धड़कन) हुआ है। मैं सिस्टर को जीवन रक्षक दवाएं देने को कहती हूँ। दूसरे स्टाफ भी वहाँ आ गए हैं। हमारी पूरी टीम उन्हें रिससिटेट करने में लगी है। मैं एक स्टाफ से कहती हूँ कि उनके बेटे को फोन करके बता दे कि स्थिति गंभीर है। किंतु फोन स्विच ऑफ है। वो बार-बार अस्फुट स्वर में कुछ कह रही हैं। हमारी केरला इट स्नेही सिस्टर झुक के उनसे पूछती हैं, अम्माँ, कुछ कहना चाह रही हो ?

वो रिया का नाम ले रही हैं। कौन है रिया ? बेटी, बहू या पोती !! कोई बताने वाला है नहीं। किंतु इतना समझ जाती हूँ कि साँसों की टूटती डोर के साथ वो उसे अपने करीब महसूस करना चाहती हैं। मॉनिटर में उनकी पल्स इररेग्युलर हो रही है। मैं पल्स देखने के लिए उनकी कलाई पर अपनी ऊंगलियां रखती हूँ तो वो रिया कह कर मेरा हाथ पकड़ लेती हैं। ...मैं थोड़ा हिचकती हूँ फिर धीरे से उनके हाथों पर अपना दूसरा हाथ रख देती हूँ। पता नहीं सच में या फिर मुझे यूँ लगा कि उन्होंने निश्चिंतता की एक साँस ली है। ...थोड़ी ही देर में उस मेडिकल टीम के बीच में जिसमें उनका अपना कोई न था, उन्होंने अपनी आखिरी साँस ली क्योंकि उनके 'अपनों' को अपनी रात की नींद की फिक्र थी।

सारी औपचारिकताएं पूरी करते-करते सुबह हो गई है। उनके बेटे को खबर कर दी गई है, जवाब आया है, 'आप बॉडी मॉर्चरी में रखवा दें, हम आठ बजे तक आएंगे'। मेरी ड्यूटी खत्म हो गई है। अगले साथी डॉक्टर को मैंने सभी मरीजों के बारे में संक्षेप में बता दिया है। मेरी पलकें अब भारी हो रही हैं, मुझे घर पहुँचने की जल्दी है। आज मेरे बेटे के स्कूल में पेरेंट्स टीचर मीटिंग है, मुझे जल्दी निकलना है। उसने मुझे बार-बार याद दिलाया है,'मम्मा, आप हमेशा लेट हो जाती हो, इस बार जल्दी आना।' मेरे कदम तेजी से अपने घर की ओर बढ़ जाते हैं...।

डॉ. अनामिका मिश्रा
पत्नी डॉक्टर आर. एन. मिश्रा
अतिरिक्त मुख्य स्वास्थ्य निदेशक (प्रशासन)
पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर

कविता सामाजिक दृश्य

शिक्षित हुआ समाज भले ही,
अब भी खाली सा लगता है।
नैतिकता ओझल व्यवहारों से,
चेहरा जाली सा लगता है।।
घुटन, वेदना, नीरसता से,
मन भारी सा लगता है।
अपनों का गला घोटते अपने,
दिल पाषाणों का दिखता है।।
नैतिकता........
लघुता और गुरुता का रण,
अब चौराहों पर दिखता है।
प्रेम फिरें गलियन- गलियन,
घर में कोलाहल दिखता है।।
नैतिकता......
झूठ, दंभ, पाखंड का विचरण,
नित बाजारों में दिखता है।
सत्य फिरे मारा-मारा,
धर्म अपाहिज सा दिखता है।।
नैतिकता.......
मात-पिता अब बोझ लगे,
जीवन एकाकी दिखता है।
कथनी-करनी में फर्क बहुत,
चरित्र पतन अब दिखता है।।
नैतिकता.........
कर्म बिना फल की आशा ले,
देवालय में मेला लगता है।
माँ रोए वृद्धाश्रम में,
बेटा निर्मोही दिखता है।
नैतिकता........

आर. के. तिवारी
तकनीशियन-।।
न.क.ज., जबलपुर मंडल, पमरे
मो. 8516942236

पुस्तक समीक्षा

कुछ नीति कुछ राजनीति

समस्त प्रयास इंसान का इंसान बनने के लिए ही है

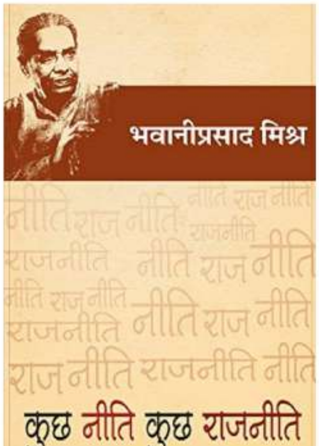

भारतीय साहित्यिक इतिहास में श्रेष्ठ रचनाकारो की गिनती में भवानीप्रसाद मिश्र जी को सम्मिलित किया जाता है। कुछ नीति कुछ राजनीति पुस्तक उन्हें श्रेष्ठ रचनाकारों की सूची में शामिल किए जाने का एक प्रमाण है।

इस पुस्तक में सधा हुआ गम्भीर लेखन मिश्र जी द्वारा किया गया है। हिंदी के वरिष्ठ आलोचक रहे नामवर सिंह जी ने कहा था कि 'विचारधाराओं की बाहुल्यता का होना बुरा नहीं है यह तो परिवर्तन का एक जरिया है।' इस पुस्तक में भी विचारों एवं संस्कृतियों के बीच के सामंजस्य को दिखाने एवं नए प्रतिपादनों को खोजने का प्रयास मिश्र जी द्वारा किया गया है। मिश्र जी प्रयोगवादी, साहित्यिक एवं राष्ट्रीय विचारधाराओं पर तो बल देते हुए दिखते हैं साथ ही साथ भारतीय दर्शन और संस्कृति से जुड़े रहने की बात भी पुस्तक के माध्यम से कहते है।

समाज को लेकर उनके प्रगतिशील भाव है जो उनके द्वारा लिखे आलेखों में परिव्याप्त है। वे लिखते है कि 'सोलहवीं शताब्दी' के बाद हम आज सारे संसार में सब कुछ भूलकर सुविधाएं जुटाने और छीनने की ओर दौड़ देख रहे हैं वह इंद्रिय प्रधान मूल्य की देन है।' ध्यातव्य यह है कि वास्तव में इन्द्रियगत मूल्यप्रधान होते जा रहे हैं और इसमें क्रमशः वृद्धि ही होनी है । इसके उलट इंद्रियातीत मूल्यों का ह्रास समाज में बराबर देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृति एवं मान्यताओं के अनुसार भौतिक सुख साधन को ज्यादा तरजीह नहीं देनी चाहिए बल्कि मानसिक एवं आध्यात्मिक सुख प्राप्त करते रहने के लिए प्रयासरत होना चाहिए। मिश्र जी इस विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित नहीं दिखाई देते । उनके अनुसार वर्तमान में हमारी संस्कृति के मुख्य घटक पारलौकिक, धार्मिक, नैतिक और सर्वहितकारी न होकर इहलौकिक, धर्म निरपेक्ष, राजनैतिक एवं स्वार्थपरक हो गए हैं और उन्होंने पुस्तक के माध्यम से सामाजिक जीवन में व्याप्त इन समस्याओं का निदान अपने मापदंडों के अनुसार प्रस्तुत किया है।

उन्होंने एक बड़े ही दिलचस्प मुद्दे पर भी प्रकाश डाला है जिसमें उन्होंने कहा है कि ब्रिटिश हुकूमत ने भारत वर्ष पर कई सालों तक राज किया। उन्होंने भारत की संस्कृति एवं सभ्यता को भी समझा परन्तु अंग्रेज साहित्यकारों ने कभी भी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को महत्वपूर्ण नहीं माना। यह काफी हद तक सही है अंग्रेज विद्वान विश्व की अन्य परम्पराओं एवं संस्कृतियों को ब्रिटिश संस्कृति के उद्भव का केंद्र मानते है पर भारत के लिये वे मतैक्य है कि भारत से उन्होंने कुछ नहीं सीखा परन्तु उन्होंने जेम्स कजिन्स एक अन्य अंग्रेजी विद्वान के विचारों का हवाला देकर अंग्रेजी विद्वानों के भारत के प्रति मतभेद को स्पष्ट किया है। यह सम्भव ही नहीं की इतने साल किसी देश पर राज करने के बाद भी उन्होंने उस देश से कुछ सीखा न हो। बल्कि विदेशी और खासकर अंग्रेजी विद्वानों ने भारत में उस वक्त व्याप्त सती प्रथा, बाल विवाह, छुआछूत आदि को लेकर समस्याओं पर अपनी रोटियां सेंकी और भारत को ओछी दृष्टि से देखते रहे।

मिश्र जी ने भारतीय संस्कृति को लेकर एक बड़ी बात लिखी है , की अन्य प्राचीन संस्कृतियां अब अपना महत्व खो चुकी है जैसे रोम और एथेंस की संस्कृतियां अब पहले जैसी नहीं रह गई बल्कि वे कुछ और ही हो चुकी हैं और इसी को लेकर उन्होंने मैसोपिटोमिया और बेबिलोनिया संस्कृतियों का उदाहरण भी जोड़ा है। पर भारतीय संस्कृति को लेकर उन्होंने कहा है कि आज भी हमारी संस्कृति कई बदलावों के बाद प्राकृतिक बदलाव करती रही है। तमाम समस्याओं, आक्रमणों आदि का सामना करने के बाद भी भारतीय संस्कृति मुरझाई नहीं है। परन्तु जिन संस्कृतियों के नष्ट हो जाने एवं बदल जाने की बात मिश्र जी ने लिखी है आज उन देशों ने अकल्पनीय विकास भी किया है। यह भी एक सत्य है जिसे हमें छुपाना नहीं चाहिये। इन संस्कृति वाले राष्ट्रों ने तरक्की की, नयी विचारधारा को अपनाया एवं आज अधिकांश राष्ट्र विकसित है। वही भारत आज उन सभी से पीछे है। क्योंकि समय के अनुसार यहाँ पर बदलाव कम हुए बल्कि आक्रमण अधिक हुए यहाँ कई लोग आये भारत पर राज किया, इसे लूटा और संस्कृति को मिट्टी में भी मिलाया। संस्कृति तो बची रही वैभव खत्म हो गया।

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है – मौलाना हसरत मोहानी

यदि हम और पीछे जाए तो देखेंगे कि हूणों ने सबसे पहले भारतीय संस्कृति को चोट पहुंचाई। ऐसा अन्य संस्कृतियों के साथ भी हुआ होगा परन्तु वहाँ के लोगो ने संस्कृति का रोना बहुत अधिक नहीं रोया बल्कि प्रगति की ओर अग्रसर रहे। मेरे विचार से एक संस्कृति कहीं से आती है और किसी अन्य संस्कृति में शामिल हो जाती है और उसके परिणाम या तो सकारात्मक होते है या नकारात्मक। भारत के प्रति यह समझा जाए तो इसे परिभाषित कर पाना कठिन है। यह चाय में बिस्किट डुबो कर खाने जैसा नहीं है। इसके लिए गहन अध्ययन एवं पठन-पाठन की आवश्यकता है जो अभी अनवरत है।

गांधी जी भवानीप्रसाद मिश्र जी के विचारों एवं आदर्शों से प्रभावित रहे है यह सर्वविदित है, उन्होंने गांधी जी के विचारों एवं मान्यताओं पर भी अपने विचार इस पुस्तक के माध्यम से प्रकट किए हैं। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने शुरुआत में कहा कि वे ईश्वर को मानते है फिर बाद में उन्होंने कहा कि वे सत्य को ही ईश्वर मानते है। और यही से उन्होंने भारत को सत्य से जोड़ते हुए लिखा कि भारत का सबसे बड़ा धर्म सत्य रहा है, सत्य हमेशा से ही स्थिर रहा है वो आज कुछ और कल कुछ और वाला नहीं है वह जो है वैसा ही है और यहीं पर उन्होंने पश्चिमी सभ्यता पर निशाना लगाते हुए लिखा की अन्य सभ्यताओं ने कामचलाऊ सत्य को माना या व्यवहारिक सत्य को स्थापित कर मानवता की हानि की है।

मिश्र जी ने साम्यवाद एवं प्रजातंत्र पर लिखते हुए प्रजातंत्र में व्याप्त समस्याओं का जिक्र किया है, उन्होंने यह कहा कि प्रजातंत्रीय राष्ट्रों में निर्णयों में सहमति होने में काफी समय लग जाता है। कोई भी छोटी या बड़ी समस्या पर सहमति नहीं बन पाती। संस्कार, अचार-विचार आदि अलग-थलग होते है। नियम कानून भिन्न-भिन्न होते हैं, जो किसी के हित में तो किसी के अहित में हो जाते है। शिक्षा, शासन, अनुशासन समाज के रूप आदि का कोई एक साफ जवाब प्रजातंत्र या विकासवाद के पास मौजूद नहीं है, इसका जवाब हमें साम्यवाद में मिलता है परन्तु वह कट्टर नीति, कठोर , क्रूर शासन प्रणाली एवं हथियार के बल पर आदेशों का पालन कराने की नीति पर चलता है जो की सही नहीं है। साम्यवाद बर्बर अत्याचारों को बढ़ावा देता एवं अभिव्यक्ति एवं स्वतंत्रता का अधिकार छीन लेता है प्रजातंत्र एवं साम्यवाद दोनों ही कहीं न कहीं असफल रहे हैं और यह बात सत्य भी है। इस पुस्तक का ग्यारह शीर्षकों पर लेखन किया गया है जिसमें गांधी जी एवं उनसे सम्बंधित घटनाओं एवं विचारों की भरमार है। मिश्र जी को सरलता से इस पुस्तक का नाम ही गांधी नीति और राजनीति कर देना चाहिए था इसमें कोई हर्ज की बात नहीं है उन्होंने अपने विचारों को कम एवं गांधी जी को पूरी पुस्तक का केंद्र बनाए रखा है। पुस्तक का पहला शीर्षक दूसरे का पूरक है या एक ही है पहला है अहिंसा : संस्कृति का आधार स्तम्भ एवं दूसरा है अहिंसा की प्रतिभा इन दोनों लेखों में अहिंसा की महिमा का बखान मिश्र जी द्वारा किया गया है अपितु यह दोनों एक ही शीर्षक के अंतर्गत आसानी से लिखे जा सकते थे।

अहिंसा को धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक पहलू से जोड़ते हुए मिश्र जी ने लिखा है कि यह तीनों से जुड़कर भी सामाजिक अधिक है। पर उन्होंने इन तीनों की ही एक संतुष्टपरक व्याख्या नहीं की है। परन्तु एक बड़ी सही बात वे लिखते हैं कि धर्म में बदलाव होते जरूर हैं परन्तु बड़ी ही मुश्किल से। सनातन धर्म की भिन्न व्याख्याएं तो हो सकती है परन्तु मूल वही रहता है। गीता का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि गीता को कई प्रकार से कई विद्वानों ने लिखा परन्तु मूल श्लोक नहीं बदले न ही उसका रूप। वह हमारी मान्यता है और उसे हमें हर हाल में मानना चाहिए। इसमें उन्होंने गांधी जी का हवाला देते हुए लिखा की अहिंसा अहंकार को नष्ट कर देती है एवं हमें पश्चिम की तरह खून बहाकर, अत्याचार कर बंदूक के बल पर नहीं चलना हमें अहिंसा के मार्ग को अपनाते हुए उसी का अनुसरण करना है। यह बात और थी की हमारी आजादी के समय तकरीबन 10 लाख लोगों ने दंगों में जाने गँवाई एवं बड़ी संख्या में शोषण एवं बलात्कार हुए। यह अहिंसा वादी राष्ट्र का एक काला सच रहा है जिसमें युद्ध ना होते हुए भी नरसंहार हुआ।

तीसरे शीर्षक 'लेखक गांधी - एकलफ्जे दर्द ' में उन्होंने गांधी जी की विचारधारा आम जन के प्रति कैसी रही उस पर प्रकाश डाला है। गांधी जी की बेचौनी रचनात्मक थी वे स्वयं को असहाय नहीं समझते थे। गांधी जी ने कहा है कि मैं एक राजनीतिज्ञ हूँ ऐसी राजनीती का, जो अपनी शारीरिक शक्ति भगवान को जानने में लगा रहा है। गांधी जी ने अपने कई विचारों से राष्ट्र को संभाला एवं पोषित तो किया है परन्तु कई जबरन विचार मुल्क के लोगों एवं राजनीति पर भी थोपे हैं उसका जिक्र मिश्र जी ने नहीं किया। इसके उपरांत गांधी जी की जीवनी के कुछ अंशों को इस शीर्षक में जगह देकर खानापूर्ति की गई है। इसी में एक कविता के माध्यम से उन्होंने गांधी जी के प्रति अपनी श्रद्धा ज्ञापित की है। इसके उपरांत अन्य शीर्षकों पर नजर डालें तो गांधी - खेत भी बीज भी, गांधी नीति पर भी गांधी जी के दर्शन से पुस्तक को भरा गया है। उसके बाद लेव टॉल्सटॉय का दर्शन लिखा गया है यह इसलिए भी लिखा गया होगा क्योंकि गांधी जी ने टॉल्सटॉय आश्रम की स्थापना की थी और वे टॉल्सटॉय से

प्रभावित रहे है। टॉल्सटॉय ने लिखा है कि 'दुनिया की आज की स्थिति के बावजूद धर्म को व्यवहारिक बनाया जा सकता है एवं धर्म को आचरण में उतारने के प्रयास करना चाहिये'। जब वे ये लिख रहे थे तब वे एक युद्ध में अधिकारी थे।

मिश्र जी ने टालस्टाय और गांधी जी को एक समान समझा है वे दोनों की विचारधारों से प्रभावित हुए क्योंकि दोनों तकरीबन एक जैसे थे। यह कई मायनों में हकीकत है कि टॉल्सटॉय ने जो तर्क एवं तथ्य दुनिया के सामने रखे है वो अनुकरणीय एवं प्रचारणीय है। उन्होंने मानवतावाद एवं धर्म को लेकर कई बार लिखा है जिसमें उन्होंने लिखा है कि हमें रोज अपनी जरूरतें कम करते जाना चाहिए दूसरों से लाभ नहीं लेना चाहिए। कुल मिलाकर उन्होंने विकासवाद को सामाजिक बुराइयों एवं दुर्गणों का जिम्मेवार ठहराया है उन्होंने लिखा की जिस तरह से आज समाज चल रहा है उससे शब्द अपना मतलब खो देंगे एवं नँगा होकर नाचना कला कहलायेगा एवं अपशब्द बड़ा साहित्य। आज के परिवेश में यह बात उचित बैठती है कि नंगापन आज कला बन चुकी है एवं गालियाँ और अवैक्यारिणीक भाषा अधिक पसन्द आने वाला साहित्य। मिश्र जी के मुताबिक टॉल्सटॉय अहिंसा के समर्थक थे। इसके आगे अन्य शीर्षक 'इस व्याकुलता को समझिये' में उन्होंने शस्त्रीकरण के विरोध में आवाज उठाई है। उन्होंने लिखा की स्वार्थ एवं लोलुपता के बढ़ रहे कारण शस्त्रीकरण का नया चेहरा है। उन्होंने इसे भयंकर स्थिति की संज्ञा दी है। भारत की राष्ट्रीयता में उन्होंने लिखा की किसी भी चर्चा में वजन लाने के लिये वेदों का सहारा लिया जाता रहा है। भौगोलिक दृष्टि से न सही सांस्कृतिक दृष्टि से हम एक राष्ट्र के रूप में जुड़े रहते है। परन्तु हम अपने प्राचीन इतिहास पर झूठा अभिमान करते है। हम दकियानूसी परम्पराओं, विचारधाराओं में उलझे रहे एवं आपस में बंटे रहे जिसका फायदा अन्य जातियों ने युद्ध कर उठाया परन्तु हमने फिर अपनी महानता का गुणगान करते हुए कहा कि हमने अन्य जातियों को अपने में मिला लिया है। और उनका अस्तित्व हमसे रह गया परन्तु फिर हम यह भी कहीं न कहीं मानते है कि दो कौमे आयी जिन्हें हम अपने में समाहित नहीं कर सके। उनकी विचारधारा, परम्परा आदि हम पर हावी हुई। जिससे हम उनके रंग में ढ़लने लगे। यह भोगा हुआ यथार्थ है हम इससे सदैव बचते ही रहे हैं। यह हमारी आपसी समन्वयता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है।

आगे के लेख निर्माण की नयी दिशा में उन्होंने प्रजातंत्र एवं साम्यवाद को परिभाषित किया है। पश्चिमी ढंग के प्रजातंत्र एवं साम्यवाद की कमियां उन्होंने निकाली है। उन्होंने इसकी तुलना गांधी जी के विचारों से करते हुए कहा गांधी जी का संस्कृति विचार ज्यादा कारगर रहा है। हमारे राष्ट्र में अनेक संत, समाज सुधारक, राजनेता एवं साहित्यकार रहे है जिन्होंने जनजागरण एवं राष्ट्रनिर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

अंत में सर्वोदय पत्रकारिता में उन्होंने लिखा कि गांधी जी ने पत्रकारिता को एक सेवा के रूप में माना था। स्वस्थ पत्रकारिता ही सर्वोदय है। पत्रकार को शब्द शुद्धि पर जोर देना चाहिए एवं बात को यथाउचित ढंग से समाज के सामने रखना चाहिए ना की उसे बढ़ा-चढ़ा कर या उसमें नमक मिर्च लगा कर। सत्य के प्रयोग की तरह पत्रकारिता सत्य को खोज रही है। उन्होंने कहा खबर देने में सब्र का सहारा लो और मन में मलाल मत रखो।

इसी तरह गांधी जी के आदर्शों एवं विचारों को पुस्तक में समेटे हुए यह पुस्तक अपने अंजाम पर पहुँचती है। इस किताब के सभी लेख जो कि मूलतः गांधी विचारधारा से प्रेरित हैं, पाठकों के सामने बहुआयामी गांधी दर्शन एवं अल्प मात्रा में भवानी प्रसाद मिश्र जी का विश्लेषण बहुत जरूरी और महीन चीर-फाड़ करते हैं। लगभग सभी आलेखों में दिए गए वर्तमान, अतीत और देश-विदेश के उद्धरणों के कारण यह जटिल विषय ज्यादा गहराई और बहुत आसानी से पाठकों को समझ में आता है। परन्तु इस पूरी पुस्तक में जितने भी द्रष्टव्य एवं उदाहरण दिए गए है वे सब विदेशी विद्वानों के हैं। भारतीय विद्वानों एवं विचारकों के नाम पर एकमात्र गांधी जी है।

अतः यह पुस्तक गांधी बनाम विदेशी विचारक ज्यादा दिखती है। मुझे यह समझने में परेशानी होती है कि इतने बड़े राष्ट्र में अनेकोनेक विद्वान होने के वावजूद उनके विचारों को जगह क्यों नहीं दी गई। इन सबके परे की बहस से जुड़े सभी देखे-अनदेखे पहलुओं पर सही दिशा में विस्तार देती यह एक बेहद समसामयिक किताब है। यह किताब आपके अंदर की अनेक धारणाओं को चूर-चूर भी करती है इसलिए इसे पढ़ना बेहद आवश्यक है। कुल मिलाकर देश, देशप्रेम, गांधी चिंतन, साम्यवाद एवं प्रजातंत्र को समझने और इस बहस को सही दिशा में आगे ले जाना चाहने वालों के लिए यह एक अच्छी और जरूरी किताब है।

मयंक रविकांत अग्निहोत्री
अवर लिपिक/परिचालन विभाग
मुख्यालय, जबलपुर, पमरे
मो. 8962638794

कविता

तुम्हारा वट

वट हूँ , तुम्हारा ! यही तो कहा था तुमने,
हर दिन, साँझ गाए उन छंदों में,...
देवत्व- सिरजने वाले उन 'शब्दों' में ...
किन्तु, तुम्हारे गीतों पर परिक्रमाएं ।।
तुमने नहीं ! मैंने की ,
अपने पाँवों की माटी सहित,
उन तमाम द्वंद्व और 'संघर्ष' की
उस 'रण' की -परिक्रमा !
जो तुमने चुने... बुने.. ।।
परिक्रमा !....
पीड़ा और मुस्कान की,
शोक और उल्लास की
तुम्हारी ...तुमसे ही सिक्त !
क्योंकि ,
उन अनवरत परिक्रमाओं में
तजता-रचता रहा -
एक 'आश्रय' !
एक विशाल.. 'वट',
स्वयं मेरे ही भीतर ।
तुम्हारी रोपी अंतहीन प्रतीक्षा
वट की अनंत जड़ लताओं
से जा मिलीं ।
जानती हो ..प्रिये !
ठूँठ हो चली, उन
वन लताओं की,
त्रासद नियति ..,
कोई पड़ाव नहीं ।
प्रवाह है-अंतरतम में ।
प्रत्येक क्षण में घनीभूत
अनुत्तरित प्रश्न ...गिरह !
कि-कौन से क्षणों में
छला गया ?
कब उस वट
को 'बोनसाई' बना
एक 'शुष्क मुस्कान' की चादर बिछा दी तुमने ?

और ...कब सूख गई,
आस्था की वह बेल
और प्रेम का - वह पुष्प ?
उन सब छंदों-
गीतों का उत्स !
कब रौंदा गया ?
'प्रश्न' मूक
और
उत्तर प्रखर ,
आत्मस्त ।
अनवरत टीस ,
कि,
ऐसा क्यों होता -
की 'अर्थ' छलते हैं,
और व्यर्थ हो जाती है, हर 'सर्जना',
हर साधना ?
क्यों,
टूटते हैं सतरंगी इंद्रधनुष ?
क्यों डूब जाती है
पाल वाली नौका ?
इसलिए, अब हर दिन
उठाता हूँ दीवार ।
हर साँझ,
झाड़ता हूँ,
अपनी जड़ों की नमी को,
तुम्हारे नाम की माटी को,
कि संभावना किसी 'छल' की
किसी 'वट' की मर जाये
हमेशा के लिए ।।

रजनीश त्रिपाठी
उप महानिरीक्षक सह
मुख्य सुरक्षा आयुक्त
पमरे, जबलपुर
मो. 9752415701

लेख

काश!

हमारे ऑफिस की महिला कर्मचारियों में बेहद लोकप्रिय और हर दिल अजीज श्रीमती आहलूवालिया आज रिटायर हो रही हैं। सारी दुनिया के लिए राहत का मरहम हाथ में लिए सौम्य, शालीन और हंसमुख श्रीमती आहलूवालिया को ईश्वर ने इतनी तन्मयता से गढ़ा है कि उनके संपर्क में आने वाला हर व्यक्ति उनके जैसा हो जाना चाहता है पर इसका ठीक उलट श्रीमती आहलूवालिया न जाने क्यों मुझ में आश्रय पा लेना चाहती थीं। उम्र में मुझसे एक दशक से ज्यादा बड़ी होने के बावजूद वे मेरे पीछे एक असहाय, मासूम और कमजोर छोटी बच्ची की तरह छिप जाना चाहती थीं। उनको देखकर या उनसे बात कर कोई जान ही नहीं पाता था कि कोमल स्वभाव की यह महिला किस ज्वालामुखी को मन में दबाए बैठी है। रिटायरमेंट वाले हफ्ते में तमाम जानने और चाहने वाले सहकर्मियों ने उनके लिए हर दिन कोई न कोई पार्टी ऑर्गेनाइज की कभी महिला विंग ने, कभी यूथ विंग ने और कभी स्टाफ एसोशिएशन ने, सभी ने उन्हें नई पारी के लिए तहेदिल से शुभकामनाएं दीं। श्रीमती आहलूवालिया भी उसी सरलता और खुश मिजाज अंदाज में सभी पार्टीज में शिरकत करती रहीं और यही जाहिर किया कि वे नई शुरुआत के लिए बिल्कुल तैयार हैं। आखिर वह दिन भी आ ही गया जब श्रीमती आहलूवालिया को वास्तव में विदा लेनी ही थी। वे इंडिगो कलर की साड़ी पहने मेरे चेंबर में आईं और धीरे से मेरा हाथ दबाकर बोलीं 'आई डोंट वांट टू लीव, ऋतु ! मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया , 'अरे ! मैम इतनी लंबी पारी खेलने के बाद वापस पवेलियन जाते हुए मन का भर आना स्वाभाविक ही है।' अचानक उन्होंने चेंबर की चटखनी बंद कर ली और फूट-फूट कर रोने लगीं। मैं एकदम सकपका गई। वे बोलीं, ऋतु ! सब कुछ इतना सामान्य नहीं है जैसा सब समझते हैं, ऑफिस आती हूँ तो जिंदा होने का एहसास होता है। यहाँ काम है, कंपनी है और सम्मान भी। घर में वैसा नहीं है मिस्टर आहलूवालिया तो बिल्कुल इंडिफरेंट हैं । 35 साल की शादी और दो बिल्कुल अपरिचित इंसान जो इंसीडेंटली ट्रेन के एक ही डिब्बे में सफर करते हैं ये बच्चे भी न तो आपस में और न ही मुझसे कुछ खास बात करते हैं, नाश्ते और खाने के मेन्यू को छोड़ दिया जाए तो बाकी सब बातों में बच्चों की नजरों में मुझ में वह 'क्लास' नहीं है। अपने दोस्तों की कंपनी में जोर-जोर से ठहाका मारने वाले मेरे बच्चों को मेरी साधारण बात भी शोर लगती है । 'इस बार मुझे वाकई हंसी आ गई मैंने कहा- मैडम ! आप जिंदगी को बहुत सीरियसली ले रही हैं - यह वक्त मातम मनाने का नहीं है, आप अपनी मुट्ठियों को ढीला छोड़ें और जिंदगी को अपनी गति से बहने दें। बच्चे अब बड़े हो गए हैं, उन्हें अपने हम उम्र दोस्तों की बातें ज्यादा रिलेटेबल लगती होंगी, आप शायद उन्हें 'जज' करती हैं। क्या आपने कभी गाय, कुत्तों या बतख को अपने बच्चों की जिंदगी में हस्तक्षेप करते देखा है? दोनों बातें एक साथ सही नहीं हो सकती या तो बच्चे इंडिपेंडेंट सोच वाले मजबूत इंसान बन सकते हैं या वह हर तरह से आपके ऊपर निर्भर रहकर आपको हर समय खुश रखने वाले स्टफ्ड टॉयेज हो सकते हैं।

जहाँ तक मिस्टर आहलूवालिया का प्रश्न है तो उनकी गंभीरता और समझदारी को आप शायद इनडिफरेंट होना समझती हैं। आप ही तो कुछ दिन पहले कह रही थीं कि आपकी कजन वर्षा का हसबैंड बहुत शक्की और तुनक मिजाज है, उसे हर बात में बीच में बोलना होता है, घर में क्या खाना बनेगा और वर्षा ऑफिस में किस कलर के कपड़े पहन सकती है यह सब उसके हसबैंड डिसाइड करते हैं। आप शायद मिस्टर आहलूवालिया को अंडर एस्टीमेट कर रही हैं। आप पढ़ी-लिखी और बेहद मेहनती हैं, अपने आप को इज्जत दीजिए फिर हमेशा दूसरों से सम्मान पाने की लालसा अपने आप खत्म हो जाएगी, आप सरकारी सेवा से रिटायर हो रही हैं जिन्दगी से नहीं। आप कल ही कोई अन्य कार्य स्थल ज्वाइन कर लें जहाँ आपकी योग्यता और मेहनत का लाभ इस सीमित चारदिवारी को नहीं बल्कि पूरे समाज, देश और दुनिया को मिल सके.'यू हैव अ वंडरफुल हीलिंग पावर ऋतु!' कहते हुए श्रीमती आहलूवालिया मुस्कुराते हुए चली गईं। मैंने अपने आप से कहा 'काश !...मेरी यही हीलिंग पावर खुद मेरी जिंदगी के बिखरे हुए सिरों को भी जोड़ पाती.......'

श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव
वरिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
कोटा मंडल, पश्चिम मध्य रेलवे
मो. 9414458416

कविता

मन

वो कर लेते होंगे ये सब बर्दाश्त,
मगर क्या करूं इंसान हूँ मुझे ये सब सहन नहीं है
एक फूल मुरझा जाए और बागवान उ़फ भी न करे,
ये तो वो एहले चमन नहीं है.
ये कैसे हुआ कि ना हो लिहाज़ ना हो अदबो आदाब,
ना दूसरे के गम में सिसकियां
होगा तेरा कोई ये लंबा चौड़ा कारोबार,
मगर मेरे लिए ये कोई 'जर-ए-समन नहीं है.
कर रहा है जो तारीफ़ हाथ थाम के,
और कर रहा है जो पार्टी में सबसे गलबहियां
लगता है ये किरदार किसी नाटक या फिल्म का,
ये सियासी 'ताइर--चमन नहीं है.
ज़हर उगलें वो एक-दूसरे पे बेसाख्ता और फेंकें,
बड़ी सिद्दत से एक दूसरे पे कुर्सियां.
गलतफ़हमी है आपको होगा वो कोई मछली बाज़ार,
ये मेरे भारत का सदन नहीं है.
लगता है कि रो-रो के हम बस यूं ही मर जायेंगे,
यहां सुन-सुन के सबकी झिड़कियां
उम्र अब हो चली है और आ गई है बुर्ज़ुगी,
अब मेरा वो पहले जैसा बदन नहीं है.
ताउम्र हम यूँ ही बैठे रहे इसी इंतजार में,
कि कभी तो खुलेंगी वो 'कुशादा खिड़कियां
हम सब जानते हैं दिल के बारे में ऐ 'दोस्त',
मगर उनका मेरे जैसा नाजुक मन नहीं है.

शब्दावली-

'जर-ए-समन = नक़द रुपया
'ताइर-ए-चमन = बुलबुल
'कुशादा = बड़ी/बड़ा, खुला, लंबा-चौड़ा

जुल्फिकार अली खान (जावेद)
सीनियर सेक्शन इंजीनियर (संकेत)
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 9752413222

वक्त दम तोड़ देते हैं

मैंने जी कर गुजारा है वो लम्हा,
जहाँ लोग उलझ कर दम तोड देते हैं,
आया था वो दौर भी जिंदगी में जहाँ गैर तो गैर रहे,
अपने भी साथ छोड़ देते हैं।

समझौते की जिन्दगी जी कर,
इच्छाओं को दफन कर रहा हूँ,
पीकर जहर संताप और बेबसी का,
मैं धीरे-धीरे मर रहा हूँ

कुछ भी कर गुजरने को दिल, दिमाग तैयार होता है,
इंसान अगर सही हो तो प्यार सिर्फ एक बार होता है।

खरीद सकता है ईमान इंसान का, कदमों में जहां कर सकता है,
रुपया वो मायावी चीज है दोस्त, जो ना को भी हाँ कर सकता है।

ना जाने कितने एहसासों को दिल में दबाए रखता हूँ,
मैं सब से ही सब कुछ छुपाए रखता हूँ,

अपना बनाकर पराया कर जाते है लोग आजकल
इसलिए खुद ही सब से दूरी बनाए रखता हूँ।

अरे अंत होगा सभी दुःखों का, हमारे फूटे भाग्य भी खिल जाएंगे,
इंसानियत रखना मन में,पता नहीं किस रूप में ईश्वर मिल जाएंगे।

हिम्मत कर, सब्र कर, बिखर कर भी संवर जाएगा,
यकीन कर, शुक्र कर, वक्त ही तो हैं गुजर जायेगा।

देवराज चापागाई
कार्यालय अधीक्षक/वाणिज्य विभाग
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 7701082990

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो, तो वह देवनागरी ही हो सकती है
- जस्टिस कृष्ण स्वामी अय्यर

कहानी

पुश्तैनी घर

38 वर्ष रेलसेवा करने के उपरांत आखिरकार सेवानिवृत्ति का दिन भी आ गया,मन में तमाम भाव उमड़ना शुरू हो गए । सरकारी आवास अब छोड़ना है, कहाँ रहना है चिंता हम पति-पत्नी को खाये जा रही थी। बेटियों का विवाह हो गया था , तीनों अपने-अपने घर में सुख से रह रहीं थी, बेटा जो छोटा था और दूसरे शहर भोपाल में अपनी एम. बी. ए. की पढ़ाई कर रहा था।

मेरी पत्नी ने पूछा -आपने कुछ सोचा क्या करना है कहाँ शिफ्ट होना है? मैंने बिना वक्त गवाए तपाक से उत्तर दिया- सोचना क्या है- अपने पुशतैनी घर चलेंगे। इस पर पत्नी ने बड़े शांत मन से मुझसे कहा-पता है आपको वो घर हमें छोड़े हुए वर्षों हो गए घर खस्ता हाल होगा, यहाँ इतनी सुविधायुक्त जीवन गुजारने के बाद वहाँ रहना कितना दूभर होगा। इस उम्र में बस सर्वसुविधायुक्त घर होना चाहिए-मैंने कहा तो क्या उस घर को रेनोवेट करा लेंगे इसी बीच अचानक पत्नी के भाई का आगमन हुआ। थोड़ी देर औपचारिक वार्ता के बाद उसने अपनी दीदी से पूछा-दीदी अभिनव कहाँ है? पत्नी ने कहा -एम. बी. ए. कर रहा है। भोपाल में एक अच्छे कॉलेज में एडमिशन कराया है। हम लोग भी अब अपने झाँसी वाले पुश्तैनी घर चले जायेंगे कुछ दिन किराये से वहाँ घर लेकर उसे रेनोवेट कराएंगे। पत्नी का भाई बोला-दीदी मेरे विचार से यदि किराये से रहना है तो आप भोपाल क्यों नहीं रहती, अभिनव को भी सुविधा हो जाएगी। होस्टल में न रहकर आपके साथ ही रहेगा। ये विचार सुनकर मुझे भी उपयुक्त लगा। हम दोनों की भोपाल शिफ्ट होने की सहमति बन गई।

सेवानिवृति के बाद हम लोग भोपाल किराये के मकान में शिफ्ट होकर रहने लगे। एक दिन पत्नी ने बड़ी आतुरता से मुझसे कहा- क्यों न हमलोग यहीं घर/फ्लैट खरीद लें अच्छा शहर है अभिनव की एम.बी.ए. के बाद यहां नौकरी भी लग जायेगी। मैनें पत्नी को समझाने की कोशिश की मेरी उस घर से बहुत यादें जुड़ी है सब रिश्तेदार भी वहीं हैं, मेरा मन अन्य जगह नहीं लग सकता। पत्नी ने बड़े शांत मन से कहा-मैं जानती हूँ वो घर और पुरानी यादें आपके दिल से नहीं जाएंगी पर वो घर की चीजों को भूल जाइए। वो यादें जो आपके दिल में हैं उसे कोई नहीं छीन सकता।

उसकी कही ये बात मेरे दिल दिमाग में छा गईं तुरंत मैने फ्लैट बुक कर दिया । कुछ दिनों में पजेशन मिल गया और नए फ्लैट में रहकर कभी फ्लैट को कभी पत्नी को देखकर आनंद से समय बिताने लगे। परंतु पत्नी की अचानक हृदयाघात से स्वर्गवास हो गया इस सर्वसुविधायुक्त फ्लैट में मात्र 4 वर्ष की अवधि तक ही रह कर आनंद उठा पाई। आज भी मैं और मेरा बेटा अभिनव उसके सौजन्य से प्राप्त फ्लैट में रहते हुए उस महान गृहलक्ष्मी की याद करते हैं तो आँखें भर आती हैं।

हरीश श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी
पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर
मो. 9179947784

गज़ल

पा लूँ इल्म उस राह पे चलने की सोचता हूँ
गौतम की तरह घर से निकलने की सोचता हूँ

तुम आग हो काम है तुम्हारा तो जलाना
मैं तो मोम हूँ मैं बस पिघलने की सोचता हूँ

ये बात और उजाला है कायम मुझही से
सूरज हूँ तारों के लिए ढ़लने की सोचता हूँ

उसको गम-ऐ-इश्क में दिखाई देने की खातिर
आँख में आँसू की तरह पलने की सोचता हूँ

कोई बदले ना बदले पर सच कहूँ फैयाज
मैं दिल की दुनिया को बदलने की सोचता हूँ

राकेश शर्मा (फ़ैयाज़ जालौनवी)
सीनि. से. इंजी. (कैरिज एवं वैगन)
भोपाल मंडल, पमरे
मो. 9752187238

लघुकथाएं

ध्येय

सुदेश और अमित दोनों सहपाठियों ने डॉक्टर की डिग्री लेने के बाद एक ही शहर में थोड़े फासले से अपनी - अपनी क्लीनिक खोल लीं । कुछ दिनों बाद सुदेश की क्लीनिक चल निकली और अमित दिन भर हाथ पर हाथ रखकर बैठा रहता। बा- मुश्किल से एक-दो मरीज ही आते। यह देखकर एक दिन अमित सुदेश से मिलने आया और कहने लगा, यार ! क्या बात है, मेरी क्लीनिक में दिन भर में एक-दो मरीज ही आते हैं और तुम्हारे यहाँ तो सारे दिन लाइन ही लगी रहती है ।

सुदेश ने अमित की बात सुनने के बाद इत्मीनान से कहा -

'मित्र ! तुम सौ रुपए की मेडिसिन देकर दो गुने दाम लेते हो' जबकि मैं उसी मेडिसिन के मात्र पचास प्रतिशत लेकर संतुष्ट हो जाता हूँ। साथ ही मेरे मरीज भी स्वस्थ और संतुष्ट हो जाते हैं। मैं अपना ध्येय सेवा समझकर, मरीज को मरीज ही समझता हूँ । ग्राहक या कस्टमर नहीं ।

सुनकर अमित भी संतुष्टि के साथ एक ध्येय लेकर अपनी क्लीनिक की ओर चल दिया ।

रिश्वत की आदत

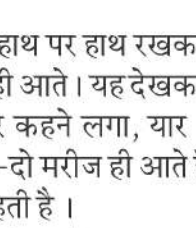

'पिताजी ! मुझे भी सौ रुपये दीजिए मैं भी गणित के पेपर के दिन कॉपी में आलपिन से अंदर अटेच कर दूंगा। कॉपी चेक करने वाले सर मुझे भी पास कर देंगे' । राजेश भी यही कर रहा है ।

संदीप की यह बात सुनते ही पिता ने एक जोरदार चांटा उसके गाल पर मारा । संदीप की माँ तुरंत ही दौड़ी आई, जो खाना बनाते हुए किचिन में सारी बात सुन रही थी। कहने लगी, क्यों मारते हो उसे। दे दीजिए, सौ रुपये। पास तो हो जाएगा। वैसे भी उसकी गणित कमजोर है ।

संदीप के पिता ने जोर देकर कहा। नहीं, यह आदत गलत है। रिश्वत देकर काम करवाने वाली यह गंदी आदत इसको अभी से पड़ जाएगी। और यह पढ़ाई को भी गंभीरतापूर्वक न लेकर अपने भविष्य की नींव कमजोर करेगा। कॉपी चेक करने वाले टीचर यदि रुपए देखकर और नाराज हो गए, फिर.... ? इससे तो अच्छा है कि यह अपनी पढ़ाई पर ध्यान देकर और ज्यादा मेहनत करें । पास होने पर मैं इसे सौ रुपए अलग से ईनाम में दूंगा। लेकिन इस तरह गलत आदत डालने के लिए नहीं।

सुनकर संदीप की माँ शांत हो गई और संदीप भी अपने कमरे में पढ़ने बैठ गया ।

स्वच्छता अभियान

स्वच्छता अभियान के अंतर्गत शहर में बड़े- बड़े बैनर पोस्टर लगाए जा रहे थे। नामी-गिरामी लोग कुछ दिनों से जाग्रत अवस्था में दिखाई दे रहे थे। वे अपने-अपने ग्रुप के साथ कचरा यहाँ से वहाँ बुहारते हुए फोटो खिंचवाकर समाचार पत्रों - न्यूज चैनलों आदि में न्यूज देकर चारों ओर से वाह-वाही बटोर रहे थे । इसी बीच कॉलोनी में आज उन्होंने एक स्वागत सभा का आयोजन भी रखा था। विधायक जी को भी आमंत्रित किया गया था। स्वच्छता पर सभी ने विचारोत्तोजक भाषण दिए। पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं एवं प्रचारकों को उपहार देकर फूल मालाएं पहनाई गईं । भूरि- भूरि प्रशंसा भी की गई ।

यही सब कार्य कलाप, पंडाल के एक कोने में खड़ा नियमित सफाई बाला मंगलू भी देख रहा था। भीड़ की धक्का-मुक्की में कभी उसे इधर धकेल दिया जाता, कभी उधर। अंत में सभा समाप्ति पर जब स्वल्पाहार वितरण हो चुका, तो उसे एक ठंडी सांस लेते हुए बाहर जाना ही पड़ा।

जाते हुए उसके मन में चाय-नाश्ते से मोहताज होने का कोई अफसोस नहीं था। वह तो एक ही बात सोच रहा था कि उसकी साफ-सफाई में कहाँ कमी रह गई ।

संत कुमार मालवीय
वरिष्ठ तकनीशियन
सडिपुका, निशातपुरा, भोपाल,प.म.रे.
मो. 9425393492

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है। - डॉ. ग्रियर्सन

व्यंग्य

बेशर्माई तेरा आसरा

कार्यालय में देरी से पहुँचना और समय से पूर्व सीट छोड़ देने की पावन परम्परा है। मैं कोई अपवाद नहीं हूँ। मैं भी उसी भ्रष्ट बिरादरी का मामूली सदस्य हूँ। मामूली इस लिहाज से कि अपनी औकात और हिम्मत चाय-पानी से उपर कभी न हुई। भला मेरी इतनी मजाल कहां कि मैं सामाजिक नियमों की अवहेलना करके बागी कहलाऊँ। अपने सहकर्मियों की देखा-देखी मैंने भी अपने सामने रखी फाइलों के ढ़ेर को एक ओर सरकाया।

मेज की दराज से छोटा-सा लंच बाक्स निकाला। और घर की राह पकडी। छोटा सा लंच बाक्स इसलिए लाते थे कि दफ्तर में भूख ही नहीं लगती थी। लोग अपना काम करवाने आते तो चाय नाश्ता करवा ही जाते। पेट में जगह ही नहीं बचती। कभी कभार तो लोगों को मना करना पड़ता कि भाई साहब चाय-नाश्ते की कोई जरूरत नहीं है।आप का काम करना हमारा फर्ज है। सरकारी काम है। सरकार हमें वेतन इसी काम के लिए देती है।

लोग खुश हो जाते कि बड़ा ईमानदार कर्मचारी है। जो किसी की चाय तक नहीं पीता है। अब उन्हें अपनी मजबूरी क्या बताये की साहब पेट की भी एक सीमा होती है। जब पेट में जगह ही नहीं बची तो नाश्ता कहाँ ठूंसे। आज नहीं तो कल इस लाइफ-लाइन का उपयोग कर लिया जायेगा। सामने वाला तो पहले ही आपकी ईमानदारी का कायल हो ही चुका है। अगली बार जब आयेगा तब बिना काम करवाये ही चाय-नाश्ता करवा जायेगा। और आपकी ईमानदारी के गुण गायेगा सो अलग। आखिर आपकी ईमानदारी का कुछ तो इनाम मिलना ही चाहिए।

खैर! हमने घर की राह पकडी। आँखों के आगे चाय की गर्मागर्म प्याली नाच रही थी। नाक में थी पालक के पकौड़ी की सुगंध। घर के अंदर पहुँचा तो चारों ओर सन्नाटा पसरा था। मैं किसी अनिष्ट के भय से कांप उठा। अन्दर अपनी प्रिया को कोप भवन (मास्टर बेडरूम) में मुंह फुलाये पाया। मैं दशरथ के समान डर गया। कारण कुछ समझ में नहीं आ रहा था। न मेरा किसी सुंदरी से प्रेम प्रसंग चल रहा था, न मैंने कभी भी अपनी ससुराल वालों को भला-बुरा कहा था। न मैंने कभी जली दाल का जिक्र उनकी सखियों से किया था। सब्जी काटने से ले कर बर्तनों की सफाई तक में मैंने निष्ठावान पत्नीवृता पति की तरह अपनी प्रिया का हाथ बंटाया है या यूँ कहा जाये कि इन कामों में मेरा सहयोग मेरी प्रिया ने दिया तो ज्यादा ठीक रहेगा। फिर इस नाचीज से क्या गलती हो गई। जब ये भेद नहीं खुला तो बच्चों से पूछा।

हुआ यह था कि मेरे सहकर्मी के घर नया डबल डोर फ्रिज आया था। तभी से श्रीमती जी के गुस्से का पारा थर्मामीटर तोड़ कर बाहर आने को बैचेन था। मेरे मनाने पर मानव बम की तरह फट पड़ी और लगी फटकार लगाने। वो बोली - सुनो जी, फितरती लाल भैया और आप एक समान पद पर हो। एक जैसा वेतन पाते हो। फिर भी हमारे घर में फ्रिज, कलर टीवी नहीं है। न सोने के कीमती जेवर है। ऐसा कौन सा जादू है जो आप नहीं जानते, भाई साहब जानते है।

अब मैं क्या जवाब देता। ऐसे समय में चुप रहना ही श्रेयस्कर समझा। रातें करवटें बदलते बीती। यही यक्ष प्रश्न रात भर दिमाग में गूंजता रहा, वो कौन-सा जादू है जो हम दोनों सहकर्मियों में अंतर पैदा करता है। राम-राम कर के सुबह हुई। आँखें लाल हो रही थी। चाय की फीकी प्याली जैसे-तैसे चुसकी और सीधे पहुँचे अपने पड़ौसी सहकर्मी के घर।

भाई साहब के घर से सोहन हलवे की महक आई। उस के आगे अपनी फीकी चाय शर्मिंदा नजर आई। मैं झेंप कर वापस लौटने ही वाला था कि अंदर से आवाज आई -अरे, वापस कहाँ जा रहे हो बिरादर अंदर चले आओ। अब मजबूरीवश मुझे अंदर जाना ही पड़ा। घर में मौजूद विलासिता की वस्तुएं देख कर मन विचलित हो गया। तभी भाभी जी हलवा ले आई। अपना दर्द और जलन को छुपा कर हम ने हलवा उदरस्थ किया।

भाई साहब लतीफा सुनाने में माहिर है। सुनने वालों के पेट में बल पड़ जाते है। हंसते-हंसते आज भी उन्होंने लतीफे सुनाना शुरू किया। मगर आज उनके एक भी लतीफे में कोई मजा नहीं आ रहा था। मैंने सकुचाते-सकुचाते पूछ ही लिया-'भाई साहब बुरा न मानो तो एक बात पूंछू?' भाई साहब की मौन स्वीकृति पा कर मैंने पूछा - 'भाई साहब, आप और मैं एक जैसा वेतन पाते है। तब हमारे जीवन स्तर में इतना अंतर कैसा है?'

भाई साहब मंद-मंद मुस्कुराते रहे। कभी भाभी जी को कभी मुझे देखते रहे। फिर बोले - 'बिरादर, माफ करना। ये बड़ी भेद भरी बातें है। इसी के बूते पर हमारी शान-शौकत बरकरार है।हम ये राज हर किसी को नहीं बता सकते हैं।' मुझसे दोबारा पूछने की हिम्मत न हुई। आँखें तरल हो गई। मेरी आँखों की नमी देख कर भाभी जी पिघली और बोली-'डार्लिंग, ये तो अपने है। इनसे क्या भेद छुपाना। अब बता भी दो। 'ठीक है, जब तुम्हारी ओर से ग्रीन सिगनल है तो मैं ये भेद खोल देता हूँ, भाई साहब बोले। मैंने मन ही मन भाभी जी को धन्यवाद दिया। थोड़ी देर तक कमरे में मौन छाया रहा। फिर अपनी आवाज को धीर गंभीर बनाते हुए भाई साहब बोले।

'सबसे पहले सबसे मीठा बोलों। बात करो तो मुख से शहद टपके। लोगों से व्यवहार बनाओ। फिर अपनी किसी परेशानी का रोना रो कर पैसे उधार लो और उसे मत लौटाओ।'मैं अचकचा गया। मैं बोला मगर उधारी का पैसा तो लौटाना ही पड़ता है। सामने वाला बार-बार उधारी के पैसों का तकाजा करेगा। आप को बार-बार शर्मिंदा करेगा।आखिर कभी तो पैसा लौटाना ही पडेगा।

भाई साहब मुस्कुरा कर बोले – तुम ठहरे निरे मूर्ख। अरे भाई किसी से दो तीन सौ रूपये से ज्यादा उधार मत लो। वह भी तीन चार माह के लिए। समय निकलने के बाद एक आधा माह तक पैसे उधार देने वाला झेंप के मारे आप से कुछ नहीं बोलेगा। आप भी इस स्थिति का फायदा उठाओ। एक आध माह सामने वाले को अपनी शक्ल मत दिखाओ। इस तरह छः माह निकल जायेंगे। उस के बाद भी सामने वाला पैसा माँगे तो उसे अपनी किसी नकली बीमारी का जिक्र कर के दो तीन माह की मुहल्लत मांग लो। सामने वाला पसीज कर तीन की जगह चार माह का समय दे देगा। इस तरह साल भर हो जाने के बाद हो सकता है कि पैसा देने वाला भूल ही जाये कि किसी को पैसे उधार दिये थे।

भाई साहब सांस लेने के लिए दो मिनट के लिए चुप हुए। मैं ध्यान से अपने गुरु की बातें सुन रहा था। भाई साहब ने पुनः बोलना प्रारंभ किया। यदि उधार देने वाला फिर भी पैसे मांगे तो उसे वेतन के दिन पैसे लौटाने का वादा कर लो। मगर वेतन वाले दिन अपनी शक्ल मत दिखाओ। मात्र दो सौ रूपये के लिए कोई पूरा दिन तो आप के पीछे तो घूम नहीं सकता है। उधार देने वाला थक हार कर घर चला जाएगा। ज्यादा से ज्यादा दो चार गाली बकेगा, बकने दो। वो आप को कुछ दे ही रहा है, कुछ ले तो नहीं रहा है। बीवी बच्चों को सिखा जाओ कि आप जरुरी काम से बाहर गए हो।

यदि किसी कारणवश उधार देने वाला आपकी नियत तारीख पर न आ सके तो सोने पर सुहागा हो गया। आप उधारी देने वाले को ही दोषी ठहरा दो। दोबारा मिलने पर उस से कहो की आप के लिए पैसे निकाल कर रखे थे, मगर आप ही नहीं आये। बच्चें जिद करने लगे कि पापा ' धड़कन ' देखने जाना है। मैंने मना किया कि ये पैसे चाचा जी के लिए रखे है। मगर वे नही मानें, कहने लगे, हम चाचा जी से माफी मांग लेंगे। अब चाचा जी बच्चों की इस हरकत का बुरा थोड़े ही मानेंगे।

यही प्रक्रिया चलती रहे तो दो तीन साल आराम से निकल ही जायेंगे। इस तरह दो सौ रूपये वाले सौ दो सौ उधारी देने वाले चुन लीजिए। आप के वारे न्यारे हो जायेंगे। इतने दिनों में हो सकता है कि उधारी देने वाला ही कहीं चला जाए। या अपने पैसों का गम मनाने लगे कि अब पैसे नहीं मिलने वाले। भला दो सौ रूपये के लिए कौन अपने संबंध बिगाडना चाहेगा। कुछ हिंसक स्वभाव के लोग उधारी वसूली के लिए मारपीट, गाली गलौज भी कर सकते है। मगर चिंता की कोई बात नहीं है। आप बेशर्म बन जाईये। और मन ही मन इस मंत्र का जाप करते जाईये **' बेशर्माई तेरा आसरा '**।

अब मात्र दो सौ रूपये के लिए कोई आपका खून तो करेगा नहीं। अन्ततः उधारी देने वाला आपकी सहनशीलता के आगे नतमस्तक हो जायेगा और उधारी मांगना ही छोड़ देगा। यदि आपका दिल पसीज जाये और जेब गवारा करे तब कुछ लोगों के पैसे आप दो तीन साल बाद लौटा सकते हो। हाँ उनकी जगह नये मूर्खो से उधारी लेना जारी रखना होगा। अभी पिछले माह ही मोची जूतों की मरम्मत के पैसे मांगने आया तो मैंने कहा –काका, अभी तो जूते की खरीदी के ही पैसे नहीं दिये है। पहले उस के पैसे चुका लूँ, तब आपका नम्बर आयेगा। बेचारा मन मार कर रह गया।

इसी तरह पैसों के अलावा अलग-अलग दुकानों से सामान उधार ले आईये। आराम से पैसे चुकाईये। वह भी आधा अधूरा। ज्यादा से ज्यादा यही होगा न उधारी देने वाला अगली बार आप को उधारी नहीं देगा। कोई बात नहीं, मूर्खो की कोई कमी नहीं है। तू नहीं और सही, और नहीं और सही। इस तरह आप अपना जीवन स्तर सुधार सकते हो। यही मेरी सफलता का राज है।

अब मेरी समझ में बेशर्माई का फार्मूला आ गया है। मैंने मन ही मन इसी फार्मूले का उपयोग कर के अपना जीवन स्तर सुधारने का फैसला किया। भाई साहब को धन्यवाद दे विदा ली। लौटते वक्त आँखों में चमक थी। और होठों पर ये तराना था 'बेशर्माई तेरा आसरा.......... बेशर्माई तेरा आसरा........... ल.. ल... ल.... ल...।

भाई साहब ने मुझे विदा किया। भाई साहब का आज रेस्ट है, वे नींद का कोटा पूरा करने की तैयारी कर ही रहे थे कि मैंने दरवाजे पर दस्तक दी। भाई साहब ने एक नजर श्रीमती जी पर पर डाली, वो मोबाइल में व्यस्त थी। भाई साहब ने स्वयं उठ कर दरवाजा खोला। दरवाजे पर मुझे देख कर चौंक गए।

भाई साहब बोले – 'अरे क्या हुआ गोपाल भाई? अभी-अभी तो तुम गए थे, फिर दोबारा आने की वजह? यदि कुछ देर और ठहरना था, तो फिर गए ही क्यों? ' मैंने सारे जहान

की बेचारगी अपने चेहरे पर ओढ़ ली। मायूस सा मुखड़ा बना कर सोफे पर पसर गया। भाई साहब मेरे चेहरे को निहारने लगे। वो मेरे बोलने का इंतजार करने लगे। भाई साहब बोले-'बिरादर, कुछ तो बको, अभी-अभी तो तुम हंसते-हंसते यहाँ से रवाना हुए थे। अब चेहरे पर ये फटकार क्यों बरस रही है ? '

मैं बोला- ' अब मैं क्या बोलू, बात ही ऐसी है। बोलने में शर्म आ रही है। मैं बड़ी मुसीबत में फंस गया हूँ।'भाई साहब बोले-'क्या हो गया कुछ तो कहो ? घर में सब खैरियत है ना ? कुछ बताओगे तभी तो समाधान निकलेगा। 'मैं बोला-' भाई साहब, जब मैं घर से चला था, तो श्रीमती जी ने आधा किलो मिठाई लाने को कहा था। मैं जल्दबाजी में पर्स लाना ही भूल गया। अब मैं बिना मिठाई के घर जाउंगा तो वो सारा आसमान सिर पर उठा लेगी। कुछ समझ में नहीं आ रहा क्या करूँ। '

भाई साहब ने एक नजर मेरे उदास चेहरे पर डाली और भाभी जी की ओर ताका। मैं निरीह प्राणी की तरह सिर झुकाये बैठा रहा। भाई साहब ने जेब में हाथ डाला और एक सहमा सिकुलर सा नोट निकाल कर मेरी ओर बड़ा दिया। मैंने झिझकते-झिझकते वो नोट ले लिया। फिर मैं बोला-'भाई साहब, आप का लाख-लाख धन्यवाद। वरना आज तो मेरे गले में फाँसी ही लगी थी। आपने जीवन दान दे दिया। मैं दो-चार दिन में आप के पैसे लौटा दूंगा।

ये कह कर मैंने तेजी से बाहर की ओर दौड़ लगा दी।

आज भाई साहब मेरे दफ्तर में आये। वो मेरे सहकर्मी सुदामा से बोले-'अरे यार सुदामा, तुम ने गोपाल को कहीं देखा है? 'सुदामा बोला-'अरे, अभी तक तो यहीं था। पता नहीं अचानक कहाँ गायब हो गया, जैसे गधे के सिर से सिंग। 'भाई साहब ठंडी सांस भर कर बोले-'ठीक है, मैं फिर आउंगा।' सुदामा बोला-' भाई साहब, मैं पिछले छः माह से देख रहा हूँ, आप गोपाल को ढूंढ रहे हो। वह दफ्तर में होता है, मगर आप के आते ही अंतरध्यान हो जाता है। बात क्या है ?' भाई साहब बोले -'अरे कुछ नहीं, बस यूं ही।' सुदामा बोला 'अरे छोड़ो भाई साहब आप बताओ या न बताओ मगर मुझे सब पता है।' भाई साहब सुदामा का चेहरा देखने लगे। सुदामा बोला- ' वैसे आप ने कितने पैसे गोपाल को उधार दिए है ?' 'पांच सौ '- यह कह कर भाई साहब कुर्सी पर बैठ गए।

ओमप्रकाश बिंजवे
स्टेशन प्रबंधक बागरातवा
जबलपुर मंडल, पमरे
मो. 8839860350

गज़लें

कौन कहता है कि इक दिन दास्तां हो जाएंगे
तुम अगर मिलते रहो तो नौजवां हो जाएंगे,
लौट आयेंगे परिंदे छोड़ कर के जो गये
पत्ते-पत्ते जब शजर के आसियां हो जाएंगे,
यूँ न तन्हा देखिए आएं तो पहले साथ में
आप की सोहबत मिले तो कारवां हो जाएंगे,
जिंदगी की राह पर यूँ चलते-चलते एक दिन
हम मिटाकर के भी खुद को रायगां हो जाएंगे,
हम तो यूँ ही सैर करने को गये थे बाग में
क्या पता था फूल इतने मेहरबां हो जाएंगे,
उम्र सारी कट गई बस तीरगी की क़ैद में
फिर भी हमको ये गुमां है कहकशां हो जाएंगे,
बज़्म में हम आपकी आये थे रौनक देखने
कब ये सोचा था चरागों का धुआं हो जाएंगे,

पहले पतंग जैसे उड़ाया गया मुझे
औकात में फिर प्यार से लाया गया मुझे,
जलता रहा चराग की मानिंद उम्रभर
बे-फैज पर ज़हां में बताया गया मुझे
यूं तो तमाम कश्तियां साहिल पे थी खड़ी
तय डूबना था जिसमें बिठाया गया मुझे
निकला हूँ बार-बार मैं उसकी गिरफ्त से
साज़िश से जितनी बार फंसाया गया मुझे
मैं ग़ैर तो नहीं था कभी बज़्म में मगर
एहसास अजनबी सा दिलाया गया मुझे
पत्थर नहीं था आप की राहों का मैं कभी
ऐसा भी क्या हुआ जो हटाया गया मुझे

बी.एन.तिवारी
वरिष्ठ तकनीशियन
सडिपुका, निशातपुरा,भोपाल, पमरे
मो. 9302371285

कविता

हिंदी हमारी वंदगी

ये खबर है हमको पता, क्या खुशी है हिंदी में,
बोल लिखके जो हँसी दे, गम बदले दे खुशी में,
राज ये जाना हम सभी ने, हिंदी हमारी वंदगी,
ये खबर है हमको पता, क्या खुशी है हिंदी में .....

कल की बातें भूल जा, आज की बातें है पता,
ख्वाब जो सच हो न सका था, आज वो सच हो रहा,
हम न हारे बेवसी से, न किया शिकबा किसी से,
राज ये जाना हम सभी ने, हिंदी हमारी वंदगी,
ये खबर है हमको पता, क्या खुशी है हिंदी में .....

अपना दिल अब ये कहे, लिखना पढ़ना हिंदी में,
सबके खातिर है बनी, हिंदोस्ता की भाषा हिंदी,
उम्रभर सब हंसकर कहें हिंदी हमारी वंदगी,
काम ले जिन्दा दिली से, यूं ही बोले हिंदी में,
राज ये जाना हम सभी ने, हिंदी हमारी वंदगी,
ये खबर है हमको पता क्या खुशी है हिंदी में .....

लिखने पढ़ने में जो सुकून दे, गम के बदले जो दे खुशी,
राज ये जाना हम सभी ने, हिंदी हमारी वंदगी,
ये खबर है हमको पता, क्या खुशी है हिंदी में,
ये खबर है हमको पता, क्या खुशी है हिंदी में..... ।

लक्ष्मन सिंह मेहरा
सीनियर सेक्शन इंजीनियर
ट्रिप शेड, बीना, भोपाल मंडल
मो. 9300710740

मेरी जिंदगी

एक हो तो बताऊं,
मुझे जमाने के गम है!
क्यों छेड़ते हो दीवाने को,
तड़पाते हो ,मारते हो,
मेरी जिंदगी तो वैसे ही कम है !!

जी रहा हूं कि,
इतना अब भी दम है!
उल्फत-ए-सितम सहने को,
डरता नहीं हूँ,मरने को,
मेरी जिंदगी तो वैसे ही कम है !!

ऐसा कोई है नहीं,
जिसके जीने की चाहत कम है!
प्रेम से मारो तो मर जाऊँगा,
मेरी जिंदगी तो वैसे ही कम है !!

जिंदगी के चार दिन,
उलझ गए एक दूजे में!
अब सुलझाने का वक्त कहां,
जो इच्छा है ,कर लेने दो,
मेरी जिंदगी तो वैसे ही कम है !!

झूठी हंसी में दम है,
या जीने की आस!
पता तो चले,
मौत, क्यों उदास है,
मेरी जिंदगी तो वैसे ही कम है !!

संतोष कुमार सिगोतिया 'सागर'
गैंगमैन
सीनि. से. इंजी. कार्या. (रेल पथ)
मदन महल, जबलपुर मंडल
मो. 8120402482

यदि हिंदी को भारतवर्ष के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाए, तब हमें अंग्रेजी सीखने की आवश्यकता का अनुभव नहीं करना चाहिए
- महाराज सयाजी राव गायकवाड़

कहानी

अनुशासन

एक नगर में संगीता, अपने बेटे अर्थ और पुत्री अस्मिता के साथ रहती थी, संगीता के पति का स्वर्गवास एक सड़क दुघर्टना में हो गया था, चूंकि संगीता पढ़ी-लिखी महिला थी, इसलिये संगीता को सरकारी स्कूल में संविदा पर सहायक अध्यापक की नौकरी मिल गई एवं उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ने के लिए, अपने सरकारी स्कूल में भर्ती करा दिया। संगीता बहुत ही साफ-सफाई पसंद महिला थी,वह स्कूली बच्चों को साफ एवं स्वच्छ कपड़े पहनने को कहती और स्कूल के बस्ते में किताबों को करीने लगाने को कहती, साथ ही बच्चों को होमवर्क भी अच्छे-अच्छे, साफ-साफ सुन्दर अक्षरों में लिखने को प्रेरित करती। संगीता बहन जी, बहुत ही अनुशासन प्रिय महिला थी, वे स्कूल सदैव समय से पहले पहुंचती और स्कूल की साफ-सफाई, अपने सामने करवाती और स्कूल में दीवारों पर अच्छी-अच्छी पेंटिंग बनवाईं और अनेकों महापुरुषों के चित्र भी लगवाए, इससे स्कूल बहुत ही आकर्षक लगने लगा। स्कूल में बच्चों के लिए तैयार होने वाला मध्याह्न भोजन को वे स्वयं मॉनीटर करती, जिससे संगीता बहन जी, बहुत जल्दी ही स्कूल में लोकप्रिय हो गयीं, स्कूल की प्रधान अध्यापिका भी उनसे बहुत प्रभावित हुईं और स्कूल के प्रत्येक कार्य में उनका परामर्श लेने लगीं।

संगीता बहन जी का बच्चों को पढ़ाने का तरीका भी बहुत प्रभावी था, वे सभी बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान देती थी, इससे बच्चे भी संगीता बहन जी के मुरीद हो गये। बच्चे भी अपने-अपने घरों में संगीता बहन जी की बहुत प्रशंसा करते। इस कारण से उस सरकारी स्कूल में बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए काफी लोग आने लगे, उस नगर के प्राइवेट स्कूलों से बच्चे अपनी टी.सी. लेकर सरकारी स्कूल में नाम लिखाने लगे। संगीता बहन जी प्रधान अध्यापिका से अनुमति लेकर बच्चों के लिये सप्ताह में एक दिन शनिवार को बाल सभा का आयोजन करवाने लगी। इसके माध्यम से बच्चे सामाजिक, राज- नीतिक पहलुओं की जानकारी प्राप्त करने लगे और बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होने लगा,जिस बच्चे में जो प्रतिभा है,वह उसका प्रदर्शन बेहिचक करता। इस दिन स्कूल में पढ़ाई की कक्षाएं नहीं लगती, केवल खेल-कूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता, इससे बच्चे बहुत ही खुश होते और इसके बाद वे घर पर अपनी पढ़ाई मन लगाकर करते। संगीता बहन जी ने बच्चों से वादा लिया कि वे मोबाइल फोन का उपयोग पूरे दिन में एक घंटे से अधिक नहीं करेंगे और टी. वी. भी एक घंटे से अधिक नहीं देखेंगे,सभी बच्चे संगीता बहनजी की इस बात से पूरी तरह सहमत थे, अब तो बच्चों के घर वाले भी बहुत प्रसन्न थे क्योंकि उन्हें बच्चों को पढ़ने के लिए कहना नहीं पड़ता था। बच्चे स्वयं ही अपनी पढ़ाई एवं स्वास्थ्य के लिए चिंतित रहने लगे। वे घर में बनने वाली हर प्रकार की दाल, सब्जी, रोटी खाने लगे, बाहर के फास्ट फूड को खाने से मना करने लगे एवं सभी नियमित रुप से स्कूल जाने की जिद करने लगे, बच्चों के व्यवहार में इस प्रकार का परिवर्तन निश्चित रुप से पालकों के लिए बहुत ही प्रसन्नता का विषय था।

एक दिन बाल सभा चल रही थी। बच्चे अपनी-अपनी मस्ती में व्यस्त थे। प्रधान अध्यापिका के साथ संगीता बहन जी भी आईं और प्रधान अध्यापिका ने सब बच्चों से कहा- सभी बच्चे अपने-अपने स्थान पर शांत बैठ जायें, संगीता बहन जी आप से कुछ बात करेंगी। सभी बच्चे अपने-अपने स्थान पर चुपचाप बैठ गये और संगीता बहन जी ने अपना वक्तव्य शुरू किया। सबसे पहले उन्होंने सभी बच्चों को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि वे सब उनकी बताई हुई बातों का अक्षरशः पालन कर रहे हैं, बहन जी ने बोलना जारी रखा और कहा कि बच्चों हम चाहते हैं कि आप सबका जन्म दिवस स्कूल में सब बच्चों एवं अध्यापकों के साथ मनायें और इसके लिए स्कूल के समय के बाद, हम सब मिलकर जन्मदिन मनायेंगे। सारे बच्चों ने खुशी-खुशी हामी भर दी, लेकिन एक शर्त है कि जिस बच्चे का जन्मदिन होगा,वह अपने घर से फलदार वृक्ष का एक पौधा लायेगा और उसे स्वयं अपने हाथों से रोपेगा तथा वर्ष भर उसकी देखभाल करेगा, जब तक वह पौधा हृष्ट-पुष्ट न हो जाये, सभी बच्चे इस बात से भी तैयार थे।

अब तो स्कूल में हर बच्चा अपने जन्मदिन पर एक अच्छा पौधा लगाता और उसकी पूरी देखभाल करता, इस प्रकार स्कूल में जो जगह खाली बेकार पड़ी थी वहां बहुत ही सुन्दर बगीचा बन गया और सब बच्चे खेल-खेल में अपने लगाये पौधों का विशेष

ध्यान रखते। स्वतंत्रता दिवस आने वाला था, चूंकि इस स्कूल की प्रसिद्धि पूरे संभाग में फैल गई थी। विभिन्न समाचार पत्रों में भी स्कूल की प्रगति के समाचार छप रहे थे तो माननीय शिक्षा मंत्री जी ने निर्णय लिया कि वे स्वयं विद्यालय जायेंगे और उसी विद्यालय में ध्वजारोहण भी करेंगे।

स्वतंत्रता दिवस पर माननीय शिक्षा मंत्री जी स्कूल में आये, वह स्कूल की साफ-सफाई, दीवारों पर मन भावन चित्रकारी, शानदार बगीचा और बच्चों की झकाझक चमकदार यूनिफॉर्म तथा उत्कृष्ट कोटि का अनुशासन देखकर बहुत ही खुश हुए, उन्होंने अपने जीवन-काल में पहला ऐसा सरकारी स्कूल देखा था, उन्होंने सोचा, तभी समाचार पत्रों में इस स्कूल की प्रशंसा छपती रहती थी, माननीय मंत्री महोदय ने इस स्कूल को राज्य का आदर्श स्कूल घोषित कर दिया एवं स्कूल के विकास के लिए एक लाख रुपए का पुरस्कार घोषित किया, जब उन्होंने बच्चों से बात की, तब बच्चों ने बताया कि ये सब परिवर्तन हमारी नयी मैडम संगीता बहन जी के कारण हुआ है, वहाँ खड़े अनेक पालकों ने संगीता बहनजी की जमकर तारीफ की। तब मंत्री जी ने संगीता बहन जी को बुलाया और उनसे बात की, चाहे स्कूल में पढ़ाई की श्रेष्ठता हो, मध्याह्न भोजन की उच्च गुणवत्ता एवं चाहे पर्यावरण के प्रति जागरूकता हो और अनुशासन तो उच्च कोटि का था ही इन सब बातों से माननीय मंत्री जी बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने संगीता बहन जी को न केवल स्थाई नौकरी का वादा किया बल्कि उनकी पदोन्नति कर उप प्रधान अध्यापिका बनाने का भी आश्वासन दिया।

इसके बाद मंत्री जी अपने राज्य के मुख्यालय आ गये और माननीय मुख्यमंत्री जी को पूरी जानकारी दी। तब मुख्यमंत्री जी ने संगीता बहन जी को आउट ऑफ टर्म, स्थाई नौकरी प्रदान की साथ ही पदोन्नत कर उसी स्कूल में उप प्रधान अध्यापिका बना दिया। इस उपलब्धि से संगीता बहन जी बहुत ही खुश थी, बच्चे भी अपनी माँ पर गर्व कर महसूस कर रहे थे।

जलज गुप्ता,
मुख्य नियंत्रक, परिचालन विभाग
भोपाल मंडल,प.म.रे.
मो. 9826244717

कविता

मैं सूरज हूँ

मैं सूरज हूँ जो जलता है,
जमाने को रोशन करने के लिए,
और जो डूबता है
चाँद और सितारों को नूर देने के लिए।
समंदर भी तो निकला था बादलों के लिबास में,
मुझको रोकने के लिए।
घड़ी-दो-घड़ी में मैं फिर से निकल पड़ा,
क्योंकि मैं सूरज हूँ जो जलता है,
जमाने को रोशन करने के लिए
बेकल था जो चाँद जमाने को,
अपना हसीन चेहरा दिखाने के लिए,
बेबस होकर रह गया अमावस को,
अपना वही चेहरा छिपाने के लिए..
मेरी शाइस्तगी तो देखो !!!!!!
वो फिर से निकल पड़ा,
अपना वही हसीन चेहरा दिखाने के लिए...
क्योंकि मैं सूरज हूँ जो जलता है,
जमाने को रोशन करने के लिए....
नाउम्मीद इंसान को उम्मीद दिलाने के लिए,
अंधेरों को उजालों से मिलाने के लिए,
रास्तों को मंजिलों तक पहुँचाने के लिए,
उसका फरमान था तो मुझे निकलना ही था, 'सहर' के लिए
क्योंकि मैं सूरज हूँ जो जलता है,
जमाने को रोशन करने के लिए.....

विवेक कुमार गुप्ता "सहर"
उप मु. सिग. एवं दूर. सं. इंजी.
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 9752415808

मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। - बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

लेख

संस्कारों की छवि

आज मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। मैं अपने बच्चे को देखकर अत्यंत गर्व महसूस कर रहा था। बचपन से ही मेरे माता-पिता ने मुझे सिखाया था कि बड़ों की इज्जत करनी चाहिए, उनसे विनम्रता से पेश आना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए। आज वही संस्कार मैं अपने बच्चे के अंदर देखकर अत्यधिक प्रसन्न था।

आज सुबह का माहौल बेहद खुशनुमा था। हल्की-हल्की ठंडी हवा चल रही थी और सूरज की किरणें घर के आंगन में सुनहरी चमक बिखेर रही थीं। हम सबने मिलकर नाश्ता किया और फिर परिवार सहित घूमने जाने की योजना बनाई। मेरे बच्चे को कार से घूमना बहुत पसंद है। जैसे ही उसे पता चला कि हम घूमने जा रहे हैं, उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह उत्सुकता से इधर-उधर भागने लगा और जल्दी से तैयार होने लगा।

जब हम सब तैयार होकर गाड़ी में बैठने ही वाले थे, तभी उसने अपनी दादी को बुलाना शुरू कर दिया। उसकी मासूम आँखों में एक अलग ही जिद दिख रही थी। हमने उसे समझाने की कोशिश की कि दादी घर पर ही रहेंगी, लेकिन वह मानने को तैयार नहीं था। जब तक दादी नहीं आईं, वह लगातार रोता रहा। आखिरकार, दादी बाहर आईं और उन्हें देखते ही उसके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। वह तुरंत उनकी गोद में चला गया और मुस्कुराने लगा। यह दृश्य देखकर मेरा मन गर्व और आनंद से भर गया।

हमने उसकी परीक्षा लेने के लिए दादी को कुछ देर के लिए घर के अंदर भेज दिया और मैं, मेरी पत्नी और बच्चा गाड़ी में बैठ गए। लेकिन जैसे ही गाड़ी आगे बढ़ने लगी, बच्चे ने फिर से रोना शुरू कर दिया और बार-बार इशारा करके कहने लगा, 'दादी को बुलाओ, दादी को बुलाओ।' उसकी आँखों में आँसू थे और उसकी मासूम आवाज में एक अटूट प्रेम झलक रहा था। जब तक दादी वापस नहीं आईं, तब तक उसने रोना बंद नहीं किया। जैसे ही दादी आईं, वह तुरंत उनकी गोद में चला गया और खुशी से झूम उठा।

इस घटना ने मेरे हृदय को गहरे से छू लिया। मुझे एहसास हुआ कि संस्कारों का बीज बचपन में ही बोया जाता है और यदि परिवार में प्रेम, सम्मान और सेवा की भावना मौजूद हो, तो वही आगे चलकर बच्चों में भी दिखती है। हर माता-पिता की यह इच्छा होती है कि उनका बच्चा संस्कारी बने, बड़ों का सम्मान करे, सबसे विनम्रता से बात करे और हमेशा बड़ों का आशीर्वाद ले।

आज के समय में, जब बच्चे आधुनिकता की दौड़ में पारिवारिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं, तब मेरा बच्चा इन मूल्यों को अपनाए हुए है, यह देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कलेक्टर, इंजीनियर या डॉक्टर बनना तो जीविका चलाने का साधन मात्र है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात है एक अच्छा इंसान बनना। आज मुझे गर्व था कि मेरा बच्चा उसी राह पर चल रहा है, जो मेरे माता-पिता ने मुझे दिखाई है।

अनुराग पटेल
मुख्य सतर्कता निरीक्षक
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर
मो. 9752415050

कविता

महाकुम्भ और रेल

मैं भारतीय रेल हूँ, कराती सबका मेल हूँ ।
महाकुम्भ में हर सम्भावना मैंने देखी है,
लोगों को सोते और जगते मैंने देखा है ।
मेरे अन्दर थी भीड़ भयंकर,
भूचालों सा शोर था अन्दर ।
जगह -जगह पर साथ निभाते और उलझते लोग थे ।
मेरे द्वारा लोगों ने जाना, कहीं पहुँचना सुलभ है माना ।
बहुत बड़ी आबादी को था, बड़ा कठिन संगम पहुँचाना ।
रेल कर्मी की मेहनत और लगन थी लोको चालक की,
करनी थी हम ट्रेनों को पूरी श्रद्धा, हर श्रद्धालु की।
महाकुम्भ में सब आये बच्चे, बूढ़े और जवान,
सबने किया पवित्र स्नान, त्रिवेणी संगम है बड़ा महान।

शुभम साहू
सीनियर सेक्शन इंजीनियर (पुल)
भोपाल मंडल, पमरे
मो. 7275737349

कविता

वीर शहीद

वीर शहीदों नमन तुम्हें, जो वतन पर निसार हुए,
धन्य है वह जीवन जो भारत भूमि के नाम हुए।।

रखी लाज भारत माँ की दी प्राणों की आहुति,
ऐसे वीरों की शमां से रोशन देश की हर बाती,
है देशवासी महफूज जब सीमा पर हो तैनाती,
परिजनों को याद तुम्हारी बरबस है आ जाती,
होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस, गुरूपर्व मनाती,
तब भी सीमा पर चौकन्ने शत्रुबल को हिकारती,
कुर्बानी तुम्हारी अब चीख-चीख कर यह पुकारती,
प्राण न्योछावर की कला देशवासियों को सिखाती,

वीर शहीदों नमन तुम्हें, जो वतन पर निसार हुए,
धन्य है वह जीवन जो भारत भूमि के नाम हुए।।

अमर जवान के लौ में नश्वर काया है समाती,
उज्ज्वल धवल प्रकाश सा कीर्ति गाथा फैलाती,
हो मरूस्थल या हिम शैल या दुर्गम नदी घाटी,
तुम्हारे शौर्य पराक्रम से सब छोटी पड़ जाती,
भारत के जयघोष से कांपती शत्रु की छाती,
बुरी नजर की साहस मिट्टी में मिल जाती,
इस देश की सीमा को सदैव विपज्जाल से बचाए
है अविचल सा देश की सीमा पर तिरंगा फहराए

वीर शहीदों नमन तुम्हें, जो वतन पर निसार हुए,
धन्य है वह जीवन जो भारत भूमि के नाम हुए।।

देश बन्धु पाण्डेय 'दिव्य'
मुख्य कार्या. अधीक्षक
मडिमका, कोटा, पमरे
मो. 9694005489

कविता

रेलों से पर्यटन

पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण पूरा हिंदुस्तान।
रेलों से पर्यटन हुआ है काफी कुछ आसान।

शिमला देहरादून मसूरी या घूमों अजमेर।
पलक झपकते ये ले जातीं नहीं लगाती देर।
भारत की है विश्व पटल पर इनसे ही पहचान।
रेलों से पर्यटन हुआ है काफी कुछ आसान।

ऊटी कुल्लू और मनाली गोवा या कश्मीर।
शादी करके घूमा करते लेकर अपनी हीर।
पूरे कर लो अपने-अपने जीवन के अरमान।
रेलों से पर्यटन हुआ है काफी कुछ आसान।

तीरथ भी करवाती रेलें लेकर मिनिमम दाम।
जब जी चाहे अल्प समय में घूमों चारों धाम।
मन में है संतोष अनोखा चेहरे पर मुस्कान।
रेलों से पर्यटन हुआ है काफी कुछ आसान।

चिड़िया घर हो अभ्यारण्य या हो वॉटरफाल।
छुट्टी में सब घूमने-फिरने जाते नैनीताल।
मिलते जाता सभी जगह का अनुभव एवं ज्ञान।
रेलों से पर्यटन हुआ है काफी कुछ आसान।

शिर्डी, ताजमहल, अमृतसर और कुतुब मीनार।
जगह-जगह की सैर सपाटा करते हैं परिवार।
'गौर' पूर्ण हो रहे सभी के आज यहाँ अरमान।
रेलों से पर्यटन हुआ है काफी कुछ आसान।

रूपेन्द्र गौर
लोको पायलट,
इटारसी जंक्शन, भोपाल मंडल, पमरे
मोबाइल-9752412936

हिंदी भारतवर्ष की सामान्य भाषा होनी चाहिए। - नरसिंह चिंतामणी केलकर

लेख

अतिथि देवो भव:

पर्यटन की दृष्टि से जब इस आर्यावर्त जम्बूद्वीप भारतवर्ष को देखा जाता है, तो यह अतुलनीय भारत देश अपने अंक में असीम दार्शनिक, पौराणिक, धार्मिक एवं प्राकृतिक स्थानों को समेटे हुये दिखाई देता है। उत्तर में भारत भूमि का शीश मुकुट गिरिराज हिमालय, दक्षिण में चरण पखारता विशाल हिंद महासागर, पूर्व में कर–कमल मेघालय, मणिपुर का नैसर्गिक सौन्दर्य और पश्चिम में फैले थार मरुस्थल और अरब सागर की युति। प्रागैतिहासिक काल के लोथल से चलते हुये मध्य कालीन भारत की अनुपम कृतियों से सुसज्जित मंदिर, किले, कलाकृतियाँ और आज के आधुनिक भारत का राम मंदिर। यह सब देखते हुये भारत देश को पर्यटन का "कम्प्लीट डोज" कहने में अतिशयोक्ति की कोई सम्भावना नहीं प्रतीत होती है। भारत के अधिकतर पर्यटन स्थान घुमने के बाद यह कहना मेरे लिए बहुत आसान है कि, भारत में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। परन्तु फिर भी भारत की जी.डी.पी. में पर्यटन का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान लगभग 5–6 प्रतिशत ही है, वहीं विश्व के कई देश ऐसे है जो पर्यटन की कमाई से ही फल-फूल रहे हैं। हमारे नजदीकी देश मालदीव, इंडोनेशिया, थाईलैंड इनकी तो अर्थव्यवस्था ही पर्यटन पर चल रही है। और यदि इनके संसाधन देखे जाएँ तो भारत अपने प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक संसाधनों में इनसे कहीं अधिक धनी है।

अपनी पर्यटन की रूचि के चलते भारत भ्रमण के बाद जब विदेशी यात्राओं का नंबर लगाया और नेपाल, भूटान से प्रारंभ कर दक्षिण एशियाई देशों का भ्रमण किया तो दिमाग के सारे तंतु जागृत हो उठे, कि क्यों भारत में सब कुछ होते हुये भी पर्यटन अपनी बाल्यावस्था से आगे नहीं बढ़ पा रहा है! अच्छा इसमें भी एक रोचक बात यह है कि जैसे–जैसे आप भारत के उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ेंगे आपकी यात्राओं का अनुभव सुधरता जायेगा। और अंडमान–निकोबार में यह अनुभव सर्वोत्तम हो जायेगा। वे लोग जो प्रकृति प्रेमी हैं और पहाड़ों पर जाना पसंद करते हैं, उनके लिए कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल और पूरा पूर्वोत्तर है, जो समुन्दर प्रेमी हैं उनके लिए अंडमान, लक्षद्वीप तो स्वर्ग है। आधुनिकता के लिए गोवा भी है। परन्तु इतना सब होने के बाद भी पर्यटक भारत को अपनी सूची में नीचे क्यों रखता है !! मेरे अनुभव पर यह कहता हूँ कि, पर्यटक की दो मूलभूत आवश्यकताएं हैं, पहली जानो–माल की सुरक्षा और दूसरी सुविधा। यह दो ही मुख्य बिन्दुहैं सफल पर्यटन स्थल के। यदि इन दोनों में जरा भी कमी होती है, तो हाल कश्मीर के पर्यटन जैसा होता है। कहने को तो स्वर्ग है परन्तु मौत के भय से जाने में असमंजस। एक पर्यटक की दृष्टि से देखेंगे तो पाएंगे कि दक्षिण भारत कुछ हद तक अनुकूल है। वहाँ का कल्चर पर्यटकों की दोनों मूलभूत आवश्यकताओं की कुछ पूर्ति तो करता है। भारत के अंडमान, लक्षद्वीप और केरल के बीच दुनिया के सबसे सुन्दर समुद्र तटों में से हैं, परन्तु पर्यटक मालदीव और बाली (इंडोनेशिया) भागता है। मैंने जब इंडोनेशिया जाकर देखा तो पूरी कहानी स्पष्ट हो गई, क्योकि घूमने आये व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में वहाँ का आम नागरिक अपना पूरा सहयोग करता है। यहाँ आपको यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा दोनों की पराकाष्ठा देखने को मिलेगी। प्राकृतिक सौंदर्य भले ही भारत से कम परन्तु सुविधाएँ और व्यवस्थाएं अपने चरम पर हैं। इसके साथ ही वहाँ के लोगों में गजब का अनुशासन है। वे रोड पर चलते समय यातायात नियमों का पूरा पालन करेंगे और सबसे बड़ी बात "टूरिस्ट फर्स्ट" की पालिसी अपनाते हुये विदेशी पर्यटकों को पहले रास्ता देंगे। वहाँ का हर नागरिक आपकी सहायता के लिए तत्पर रहेगा, चाहे आप उसके ग्राहक हों या न हों। और दोनों हाथ से पैसे लेने या देने की उनकी नम्रता तो मन मोह लेती है। चाहे दिन हो या रात महिलाएं पूर्ण सुरक्षित घूम सकती हैं, परन्तु यही बात जब भारतीय पर्यटन के परिपेक्ष में आती है तो महिला सुरक्षा हमारी सबसे बड़ी नाकामी बनकर हमें मुंह चिढ़ाती है। विदेशी पर्यटकों से लूट-पाट, चोरी, महिला पर्यटकों के साथ छेड़खानी जैसी घटनाएँ अंतरराष्ट्रीय पटल पर भारतीय पर्यटन के अतिथि देवो भव: के सिद्धांत पर कालिख पोत देती है और यह कालिख सिर्फ हमारे सिद्धांतों पर नहीं अपितु हमारी जेब पर भी पुत जाती है।

भारतीय पर्यटन स्थल विदेशी पर्यटकों को आकर्षित तो करते हैं, परन्तु भारतीय नागरिकों का व्यवहार देखकर उनका आकर्षण धूमिल हो जाता है, और पर्यटक अन्य देशों में डायवर्ट हो जाते हैं। और वहाँ के स्थानीय लोगों की जेब मजबूत होती है। ऐसा नहीं है की भारत सरकार पर्यटन पर ध्यान नहीं दे रही है, लक्षद्वीप में भारत सरकार की पहल सराहनीय है, परन्तु तराजू के पलड़े में सुरक्षा और सुविधा दोनों महत्वपूर्ण हैं। अतिथि देवो भव: के सिद्धांत को जीवंत करने के लिए पर्यटकों की सुरक्षा, सम्मान और सुविधा की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं अपितु मेरी है... आपकी है... हर भारतवासी की है....।

'ये भारतवर्ष आश्वस्त कराता, जन–जन के सम्मान को।
हर अतिथि है देव हमारा, पूजेंगे मेहमान को ।।'

शिवम दीवान
सीनियर सेक्शन इंजीनियर
विद्युत लोको शेड, इटारसी
भोपाल मंडल, प.म.रे.
मो. 8770705759

कहानी

छोटू की संघर्ष गाथा

एक छोटे से गाँव में छोटू नामक लड़का रहता था। वह एक मध्यम परिवार का रहने वाला था, उसके पिता किसान थे, उसके गाँव में पांचवी क्लास तक का स्कूल था, उसने पांचवी तक की पढ़ाई अपने गाँव के स्कूल से की, उस समय गाँव में बिजली न होने के कारण वह लालटेन की रोशनी में पढ़ाई करता था। वह पढ़ने में होशियार था, मिट्टी का तेल ज्यादा न जले इसलिए उसके घर वाले उसे देर रात तक ज्यादा पढ़ने नहीं देते थे, पांचवी पास करने के बाद छठवीं से 11वीं कक्षा तक की पढ़ाई पास के गाँव से की जो घर से 5 किलोमीटर दूरी पर था और पक्की सड़क भी नहीं थी। कच्चे रास्ते से बारिश में बहुत कीचड़ में से होते हुए वह स्कूल जाया करता था। वह अपने पिताजी के काम में भी हाथ बटाया करता था। रोज सुबह गाय भैंस एवं बेल चराने खेतों में भी जाया करता था और अपने साथ कॉपी किताब भी ले जाया करता था और खेत में पढ़ाई करता था और खेत से आते समय चारा काट कर गट्ठा सर पर रखकर जानवरों के लिए घर तक लाया करता था।

खेत से जानवरों को घर लाने के बाद तैयार होकर स्कूल जाता था, क्योंकि उस समय 11वीं बोर्ड की कक्षा हुआ करती थी। बोर्ड परीक्षा का सेंटर गाँव से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर सिवनी मालवा में था, उसके पिताजी उसे कहीं जाने नहीं देते थे बाहर भेजने में डरते थे यहाँ तक कि वह उसे 11वीं क्लास के पेपर देने नहीं जाने दे रहे थे। उस समय फोन भी नहीं होते थे उसकी मौसी का घर शिवनी मालवा में ही था। किसी के द्वारा उसकी मौसी को पता चला कि उसके पिताजी उसे पेपर देने के लिए सिवनी मालवा नहीं भेज रहे हैं तो उन्होंने उनके बड़े लड़के को जो उस समय किसी ऑफिस में ड्राइवर था, उसे गाँव भेजा उन्होंने किसी तरह उसके पिताजी को समझा कर उसे अपने साथ अपने घर सिवनी मालवा ले आए, इस तरह उसने पेपर देकर 11वीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर ली। उसकी कॉलेज में बी.एस.सी की पढ़ाई करने की बहुत इच्छा थी लेकिन घर की स्थिति ठीक नहीं होने के कारण घर वालों ने मना कर दिया। उसकी मौसी के मंझले लड़के ने उसी समय 11वीं पास की थी। उसने उस समय सरकारी आई.टी.आई. होशंगाबाद में एडमिशन के लिए खुद के साथ मेरा भी फॉर्म भरकर जमा कर दिया क्योंकि में वह गाँव का रहने वाला था। आई.टी.आई. क्या होती है समझता ही नहीं था। किस्मत से छोटू का आई.टी.आई. में सिलेक्शन हो गया अब फिर वही कहानी उसके पिताजी उसे बाहर भेजने से डरते थे, किसी तरह मौसी के लड़के के समझाने पर उन्होंने उसे साथ होशंगाबाद भेजा वहाँ पर रहकर दोनों ने आई.टी.आई. का कोर्स सन् 1984 में 2 वर्ष का रेडियो और टेलीविजन ट्रेड से उत्तीर्ण कर डिप्लोमा प्राप्त कर लिया, उसके पश्चात् उसकी मौसी के बेटे ने उसका रोजगार कार्यालय में पंजीयन भी कर दिया, आई.टी.आई. करने के बाद वह 3 वर्ष तक कभी गाँव पर रहकर खेती का कार्य करता तो कहीं शहर में पुस्तक की दुकान पर 20 रूपये रोज से काम किया करता था, छोटू की किस्मत जागी और सन् 1987 में उसका रेलवे इलेक्ट्रिफिकेशन (आर. ई) में टेलीकॉम टीसीएस तकनीशियन ।।। के लिए रोजगार कार्यालय से इंटरव्यू के लिए कॉल लेटर पोस्टमैन द्वारा उनके पिताजी को प्राप्त हुआ, जब उनके पिताजी ने वहां का लेटर खोलकर देखा तो उनकी खुशी का ठिकाना ना रहा और छोटू को उसकी जानकारी दी। वहीं छोटू भी बहुत खुश हुआ। अब इंटरव्यू के लिए भोपाल जाना था। वह भोपाल गया और इंटरव्यू दिया और उसका सिलेक्शन भी हो गया। उसकी पोस्टिंग बीना इलेक्ट्रीफिकेशन टी सी एम ।।। तक के पद पर हो गई।

अब फिर वही समस्या आ गई उसके पिताजी उसको बीना नौकरी करने के लिए जाने नहीं दे रहे थे उस समय बीना भेजना मतलब विदेश भेजने जैसा लग रहा था। उसी समय उसके चाचा जी के बेटे टीचर की सर्विस करते थे। उन्होंने उसके पिताजी को बहुत समझाया कि अभी एक बार उसको कुछ पैसे दे दो फिर वह तुम्हें हर महीने पैसे लाकर देगा और किसी तरह उसके पिताजी को तैयार करके उसे बीना भिजवा दिया। बीना में 3 साल नौकरी करने के बाद उसका तबादला खंडवा हो गया। वहां लगभग 2 साल की नौकरी करने के बाद उसका तबादला कटनी हो गया। कटनी में 2 साल की नौकरी करने के पश्चात् फिर उसका तबादला इटारसी विद्युत लोको शेड में हो गया। यहाँ पर उसने बड़ी मेहनत, लगन तथा ईमानदारी से कार्य किया और प्रमोशन पाते हुए आज वहाँ वरिष्ठ टेक्नीशियन के पद पर कार्य करने लगा और कुछ ही महीने के पश्चात् वह जुलाई 2025 में अपनी गौरवपूर्ण रेल सेवा पूरी कर सेवानिवृत्ति भी होने जा रहा है। उसकी कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि यदि व्यक्ति के मन में कुछ करने की इच्छा शक्ति एवं लगन है तो वह हर मंजिल पा सकता है

यज्ञेश कुमार गौर
वरिष्ठ तकनीशियन
विद्युत लोको शेड, इटारसी
भोपाल मंडल, पमरे
मो. 7828887618

लेख

गज़ल आत्म अभिव्यक्ति का माध्यम

गजल कविता का एक मनोरम रूप है जिसने सदियों से दिलों और दिमाग को मंत्रमुग्ध किया है। यह एक नाजुक और विचारोत्तोजक कला है जिसकी उत्पत्ति मध्य पूर्व में हुई है। प्राचीन फारस में उत्पन्न गजल ने समय और सीमाओं को पार कर लिया है।जो दुनिया भर में विविध संस्कृतियों के साथ प्रतिध्वनित होती है। यह एक गीतात्मक कृति है जिसमें भावनाओं, प्रेम लालसा और आध्यात्मिकता के जटिल पैटर्न हैं जो सभी एक संरचित कविता के दायरे में हैं। गज़ल की सुंदरता इसकी विशिष्ट संरचना और काव्यात्मक परंपराओं में निहित है। तुकांत दोहों से बनी प्रत्येक पंक्ति एक ही राग के साथ समाप्त होती है जिसे रदीफ के रूप में जाना जाता है। और मार्मिक कल्पना का भार वहन करती है। गजलों को गहन भावनाओं को जगाने के लिए सावधानी से तैयार किया जाता है। यह संरचित रूप कवियों को भावुक प्रेम और इच्छा से लेकर आत्मनिरीक्षण और दिव्य भक्ति तक असंख्य विषयों का पता लगाने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। परंपरागत रूप से गज़ल को एक तरफा प्यार और लालसा के मादक दर्द से जोड़ा जाता रहा है। कवियों ने इसे अपनी गहरी इच्छाओं और अपने प्रिय से अलग होने की पीड़ा को व्यक्त करने के लिए एक साधन के रूप में इस्तेमाल किया है।

गज़ल का आकर्षण संयम और तीव्रता के एक नाजुक संतुलन के साथ इन भावनाओं के सार को पकड़ने की इसकी क्षमता में निहित है। रूपकों और प्रतीकात्मकता के मोजेक के माध्यम से ज्वलंत चित्रों को चित्रित करता है। पूरे इतिहास में गज़ल कवियों ने साहित्यिक परिदृश्य पर एक महत्वपूर्ण छाप छोड़ी है। रूमी हाफिज मिर्जा गालिब और फैज अहमद फैज जैसे प्रसिद्ध उस्तादों ने कालातीत छंद गढ़े हैं जो पाठकों के साथ गूंजते रहते हैं और आज भी समकालीन कवियों को प्रेरित करते हैं। गज़ल की सार्वभौमिकता इसकी उन कच्ची भावनाओं को समझने की क्षमता में निहित है जो हमें मनुष्य के रूप में जोड़ती हैं। सांस्कृतिक और भाषाई सीमाओं को पार करते हुए इस आधुनिक युग में गजल विकसित और अनुकूलित हुई है। अपने सार को बनाए रखते हुए नए विषयों और आवाजों को अपनाती है। विभिन्न पृष्ठभूमियों और परंपराओं के कवियों ने इस प्राचीन रूप में नई जान फूंकी है। इसे अपने विचारों और अनुभवों से भर दिया है।

गज़ल आत्म-अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। मानव हृदय की जटिलताओं और अस्तित्व के रहस्यों की खोज करने का एक तरीका है। गज़ल एक दिलचस्प शैली है। यह एक काव्यात्मक रूप है जिसमें तुकांत दोहे होते हैं। जो आमतौर पर उर्दू या फारसी में संगीतबद्ध होते हैं और ज्यादातर एकल प्रस्तुत किए जाते हैं भारत में इसे उर्दू,पंजाबी, हिंदी और गुजराती में लिखा गया है। गज़ल में दोहे हुआ करते थे और हर दोहा थोड़ा-सा होता था। उर्दू गजलों कि साहित्यिक विधा को विभिन्न संस्कृतियों ने अपनाया है और कई अलग-अलग भाषाओं में इस्तेमाल किया है। इसे संगीतमय रूप में बोलना एक आम संबंध है। गज़ल किसी भी अन्य साहित्यिक विधा से बहुत अलग है जिसका इतिहास अपनी भौतिक सीमाओं से बाहर यात्रा करने का रहा है। इसके साहित्यिक रूप की विलक्षणता और व्यापक अपील इस काव्य विधा के अंशों और इसके कई मार्गों का संक्षिप्त दौरा करके देखी जा सकती है जो इसकी विशिष्टता और इसकी व्यापक लोकप्रियता दोनों को प्रकट करती है। गज़ल में सभी दोहों का मीटर एक जैसा होता है और इसे बहर के नाम से जाना जाता है। यह एक विशिष्ट संरचनात्मक पैटर्न है जिसमें अर्थहीन शब्दों के संयोजन होते हैं जिन्हें रुकन (बहुवचन अर्कान के रूप में जाना जाता है जो एक दोहे की लंबाई को परिभाषित करते हैं।

गजल लेखन

गजल लेखन में अर्कान की कुल संख्या आठ हैं-

फा-उ-लुन फा-इ-लुन मा-फा-इ-लुन मुस-तफ-इ-लुन फा-इ-ला-तुन मु-ता-फा-इ-लुन मा-फा-इ-ला-तुन और माफ-उ-लात एवं

कुल 19 बहर हैं

बेहर-ए-रजाज बेहर-ए-रमल बेहर-ए-बासीत बेहर-ए-तवील बेहर-ए-कामिल बेहर-ए-मुतादारिक बेहर-ए-हजाज बेहर-ए-मुशाकिल बेहर-ए-मदीद बेहर-ए-मुतकरीब बेहर-ए-मुज्तस बेहर-ए-मुजाराबेहर-ए-मुंसरेह बेहर-ए-वाफर बेहर-ए-करीब बेहर-ए-सारी बेहर-ए-खफीफ बहर-ए-जदीद और बहर-ए-मुक्ताजेब।

बहर-ए-रजज के मामले को छोड़कर ये बहर दो हेमी स्टिच में विभाजित हैं जो त्रिमितीय है। बहर काफिया और रदीफ गज़ल की गद्यात्मक संरचना स्थापित करते हैं जिसे जमीन के रूप में जाना जाता है। गज़ल के सभी दोहे एक ही जमीन में लिखे जाते

आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए। -महावीर प्रसाद द्विवेदी

हैं। गज़ल संरचनात्मक और विषयागत दोनों रूप से गायन के लिए बहुत आसान है। गज़ल के गायन के अलग-अलग दर्ज उदाहरण 12वीं शताब्दी तक पाए जा सकते हैं। जलालुद्दीन रूमी और ख्वाजा शम्सुद्दीन शिराजी की गज़लें 13वीं और 14वीं सदी में गायकों के बीच लोकप्रिय थीं। भारत में गज़ल गायन की परंपरा हजरत अमीर खुसरो ने स्थापित की थी। एक निश्चित मधुर रचना को हिंदुस्तानी संगीत पाकिस्तान और उत्तर भारत के संगीत में बंदिश के रूप में जाना जाता है। इसे एक विशिष्ट राग (मधुर विधा और ताल लयबद्ध चक्र में सेट किया जाता है।) बंदिश के पहले भाग को अस्थाई और दूसरे को अंतरा के रूप में जाना जाता है। गज़ल गायन में मतला को अस्थाई और बाकी दोहों को अंतरा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यह व्यवस्था गायकों को सुविधा और सहूलियत दोनों देती है।

गज़ल गायन में रागों का प्रयोग- गज़ल गायन में इस्तेमाल किए जाने वाले राग आम तौर पर लोकप्रिय होते हैं जो गायकों को अपने गीत में भावनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को तलाशने की स्वतंत्रता और क्षमता प्रदान करते हैं। इनमें भैरवी काफी खम्माज पहाड़ी और पीलू शामिल हैं। गज़लें लगभग हमेशा छह सात या आठ ताल के लयबद्ध चक्रों में सेट की जाती हैं। जिन्हें क्रमशः दादरा रूपक और केहरवा के रूप में जाना जाता है।

अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर की गज़लों के गायन में सात ताल के समय-चक्रों का उपयोग इतना आम है कि रूपक ताल का एक रूप जिसे मुगलई के रूप में जाना जाता है उनकी कविताओं की संरचना के समान गजल गायन के साथ जुड़ा हुआ है। वर्तमान समय में कोक स्टूडियो और नेस्कैफ बेसमेंट जैसे संगीत शो अक्सर समकालीन मोड़ के साथ लोकप्रिय गज़ल गीतों की प्रस्तुतियाँ दिखाते हैं। ऐसे टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम से इस शैली को बढ़ावा देने से युवा भी आकर्षित हुए हैं।

गज़ल शैली का विकास और लोकप्रियता-कुछ गज़ल गायक जिन्होंने गज़ल शैली के विकास और लोकप्रियता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और हमेशा के लिए अपनी छाप छोड़ी है। वे निम्नानुसार हैं-

मेंहदी हसन-गज़ल के बादशाह या शहंशाह-ए-गजल के नाम से मशहूर वे गज़ल के इतिहास में एक बेहद प्रभावशाली व्यक्ति थे, जो अपनी गहरी और कर्कश आवाज के लिए जाने जाते थे। उन्हें अपनी मधुर आवाज के जरिए गज़ल गायन को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का श्रेय दिया जाता है। एक संगीत परिवार में जन्मे वे बचपन से ही इस कला की ओर स्वाभाविक रूप से आकर्षित थे। उनका दावा है कि वे कलावंत वंश के संगीतकारों की 16वीं पीढ़ी के वंशानुगत संगीतकारों में से हैं। उन्होंने संगीत में अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की जो खुद एक प्रमुख पारंपरिक / रुपद गायक थे। उन्होंने खुद को अब तक के सबसे महान गज़ल गायकों में से एक के रूप में स्थापित किया और शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान के लिए उन्हें बहुत मान्यता मिली। नेपाल सरकार ने उन्हें 1983 में गोरखा दक्षिणा बहू से सम्मानित किया और भारत सरकार ने उन्हें केएल सहगल संगीत शहंशाह पुरस्कार से सम्मानित किया। उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध गज़लें हैं रंजिश ही सही, बात करनी मुझे मुश्किल, गजब किया तेरे वादे पे और गुलों में रंग भरे है।

बेगम अख्तर- पुराने जमाने की मशहूर गायिका मुश्तरीबाई की बेटी बेगम अख्तर का पहला नाम अख्तरी बाई फैजाबादी था। काकोरी के नवाब के परिवार से इश्तियाक अहमद अब्बासी से निकाह के बाद उन्हें बेगम अख्तर के नाम से जाना जाने लगा यह ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है कि बेगम अख्तर अर्धशास्त्रीय संगीत के सभी रूपों में निपुण थीं चाहे वह ठुमरी चौती दादरा कजरी बारामासा या होरी हो। उन्होंने विभिन्न घरानों के माध्यम से संगीत सीखा जिनमें से प्रमुख थे उस्ताद अब्दुल वाहिद खान किराना उस्ताद रमजान खान (लखनऊ) और उस्ताद बरकत अली खान ।

गुलाम अली- गुलाम अली का जन्म विभाजन पूर्व भारत अब पाकिस्तान में पंजाब के सियालकोट जिले के कालेके गाँव में हुआ था। वे एक संगीतमय परिवार से ताल्लुक रखते हैं उनके पिता एक गायक और सारंगी वादक थे जिन्होंने गुलाम अली को बचपन से ही संगीत की शिक्षा दी थी। अली के पिता ने उनका नाम बड़े गुलाम अली के नाम पर रखा था। 15 साल की उम्र में वे बड़े गुलाम अली खान के शिष्य बन गए। जो हिंदुस्तानी संगीत के पटियाला घराने पटियाला स्कूल के उस्ताद थे। बड़े गुलाम अली के व्यस्त कार्यक्रम के कारण उन्हें मुख्य रूप से लाहौर में बड़े गुलाम अली खान के तीन भाइयों बरकत अली खान, मुबारक अली खान और अमानत अली खान द्वारा प्रशिक्षित किया गया था।

उस्ताद राजकुमार रिजवी- उस्ताद राजकुमार रिजवी एक बेहद प्रशंसित गज़ल गायक हैं और भारत में राग-आधारित शास्त्रीय गज़ल गायकी के कुछ जीवित दिग्गजों में से एक हैं। एक गज़ल उस्ताद के रूप में वह अपनी शैली और करिश्माई आवाज को अपने गुरु और रिश्तेदार मेहंदी हसन के साथ साझा करते हैं। उस्ताद राजकुमार रिजवी पारंपरिक संगीत के सबसे लोकप्रिय रूप के लिए मानक स्थापित करते हैं। लाइव कॉन्सर्ट में उन्हें सुनना पारखी लोगों के लिए वास्तव में एक सुखद और उत्साहपूर्ण अनुभव है। रोमांटिक गजलों की उनकी मंत्रमुग्ध कर

देने वाली प्रस्तुति दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। उस्ताद रिजवी का जन्म राजस्थान में एक संगीत परिवार में हुआ था और उन्होंने अपने पिता और कलावंत घराने के गुरु उस्ताद नूर मुहम्मद से प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उन्होंने पंडित रविशंकर के शिष्य उस्ताद जमालुद्दीन भारतीय से सितार भी सीखा। उस्ताद रिजवी की राजस्थानी मांड और लोक संगीत गाने की भी एक अलग शैली है। उन्होंने 1976 में अविस्मरणीय फिल्म 'लैला मजनू' में 'लैला मजनू दो बदन इक जान थे' के लिए अपनी आवाज भी दी। उन्होंने राजस्थानी फिल्म मोमल के लिए संगीत निर्देशन के साथ-साथ गायन भी किया जिसे उनके प्रशंसकों ने खास तौर पर राजस्थान में बेहद पसंद किया और सराहा।

जगजीत सिंह- जगजीत सिंह एक भारतीय शास्त्रीय गायक और संगीतकार थे जिन्हें उनके जीवनकाल में 'गज़ल किंग' के रूप में जाना जाता था। रवि शंकर के बाद उन्हें उत्तर औपनिवेशिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण और पहचाने जाने वाले कलाकारों में से एक माना जाता है और निश्चित रूप से फिल्म और टेलीविजन के लिए उनके साउंडट्रैक और स्कोर और कवियों की रचनाओं की उनकी संगीतमय व्याख्या के कारण वे सबसे ज्यादा बिकने वाले कलाकारों में से एक हैं। स्कोर सहित उन्होंने अपने जीवनकाल में 60 से ज्यादा एल्बम रिकॉर्ड किए। उन्हें न केवल उनकी गज़लों और कई भाषाओं में गायन के लिए जाना जाता है बल्कि ठुमरी और भजन सहित भारतीय हल्के शास्त्रीय संगीत के लिए भी जाना जाता है।

आबिदा परवीन-आबिदा परवीन जिन्हें दुनिया की सबसे महान रहस्यवादी गायिकाओं में गिना जाता है और वे सूफी संगीत (सूफियाना कलाम) की सबसे बेहतरीन गायिकाओं में से एक हैं। बहुमुखी गायिका मुख्य रूप से गज़ल की गायिका हैं और उर्दू, सिंधी और पंजाबी सहित कई भाषाओं में गाती हैं। एक ऐसे परिवार में जन्मी जिसकी संगीत की विरासत बहुत समृद्ध है। उन्होंने अपने पिता द्वारा स्थापित संगीत विद्यालय से उच्च संगीत प्रशिक्षण प्राप्त किया और 'शाम चौरसिया घराने' के महान उस्ताद सलामत अली खान से भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस प्रकार संगीत की दुनियाँ में गज़ल आत्म अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनी हुई है।

डॉ. एजाज खान
कार्यालय अधीक्षक
भंडार विभाग, मुख्यालय, जबलपुर
मो. 8317360088

कविता गर्मी की छुट्टी

लो आ गई गर्मी की छुट्टी,
बच्चे करते खूब मौज मस्ती।
फिर से धूम मचायें हम,
चलो कहीं घूम आए हम।।

मम्मी-पापा हमें घुमाओं,
फिर दुनिया की सैर कराओ।
छुक-छुक करती रेलगाड़ी में
चलो कहीं घूम आए हम।।

नयी वादियों और नए नजारों में,
नयी यादों की दुनिया बसाये हम।
भारी-भारी बस्तों से,
कुछ दिन तो मुक्ति पाए हम।।
छुक-छुक करती रेलगाड़ी में,
चलो कहीं घूम आए हम।

कुछ दिन अपनी नानी के,
घर भी घूम आए हम।
जहाँ बीता मम्मी का बचपन
अपनी भी कुछ यादें बनाये हम।।

कुछ खेल खिलौने मम्मी के,
रखे हैं संभाले नानी ने
क्यों न उन खिलौने से
कुछ दिन तो खेल आए हम

लो आ गई गर्मी की छुट्टी
चलो कहीं घूम आए हम........।

रीता साहू
तकनीशियन-।।।
विद्युत लोकोशेड, इटारसी
भोपाल मंडल, पमरे
मो. 8839140844

लेख

चाँदनी के राहगीर

"मैं ये नहीं कहती कि तुम साथ नहीं होगे तो अकेली हो जाऊंगी, बात इतनी रहेगी मैं फिर संवरना नहीं चाहूंगी"।

ज्योत्सना ने भारी मन से कहा। "ये कहानी तुम्हारी है तो कोई महागाथा का रूप लेगी, इसमें शशांक के न रहने से कोई विशिष्ट हानि नहीं होगी" शशांक ने आगे बोला।

"और ज्योत्सना तुम नहीं सवारों अपने को तो भी तुम्हें देखने वाले अलंकृत ही जानेंगे, तुम तो सुंदर हो, महागाथा की स्वामिनी, साम्राज्ञी हो" शशांक ने आगे कहा।

" शाम ढ़लने को है , घर को चलते हैं कल तुम्हे अमरकंटक भी तो जाना है'' शशांक ने आगे कहा।

"तुम नहीं आओगे शशांक" ज्योत्सना ने कहा।

"आऊंगा क्यों नहीं ज्योत्सना, तुम्हारा उत्सव है आना तो होगा मुझे।

एक वर्ष पूर्व की बात है, अक्टूबर माह शरद पूर्णिमा का दिन था, सर्दियों की शुरुआत थी, मौसम बहुत सुंदर था, शशांक अमरकंटक के पहाड़ों में अपने मित्र विकास के साथ भ्रमण के लिए गया था। एक आश्रम में बने भव्य मंदिर के पास से दोनों मित्र गुजर रहे थे, दोनों कपिल धारा जलप्रपात जा रहे थे। मंदिर में कोई आयोजन था जिसके कारण काफी लोग वहां एकत्रित थे, जिज्ञासा से दोनों मित्र उस मंदिर में चले गए। अन्य लोगों से पता चला कि कोई परिवार अपने गुरु की प्रेरणा से आज यहाँ पूजा एवं यज्ञ का आयोजन कर रहा है। शशांक जहाँ खाना बन रहा था वहाँ पहुँचा, तभी पीछे से किसी युवती की आवाज आई, " चाचा, भोजन तैयार है न ?""हाँ बेटी सब तैयार है" खाना बनाने वाले ने कहा। "अभी कुछ समय में हवन शुरू होने वाला है, खाने को खोल कर रखिएगा, हवन से उठती हवा का भोजन में स्पर्श भोजन को प्रसाद बनाता है। शशांक ने जब उसे साड़ी पहने लड़की को देखा तो एक पल में बहुत सी जिज्ञासा उसके हृदय में उठने लगी। वो भी धीरे से हवन वाले चबूतरे के पास जा कर खड़ा हो गया।

हवन शुरू हुआ, यज्ञ की आहुतियाँ अर्पण होने लगी, अग्नि अपने पूर्ण वैभव में प्रज्वलित थी और हवन कुंड के सामने अन्य लोगों के बीच विद्यमान वो तरूणी अग्नि और धुएं के उस वातावरण के बीच, अपने पूर्ण ऐश्वर्य के साथ आहुतियाँ दे रही थी मंत्रों की कंपित ध्वनियाँ संपूर्ण संदर्भ को अलौकिक बना रहीं थी। भंडारा शुरू हुआ शेखर की भूख तो मर चुकी थी पर विकास ने शशांक का हाथ पकड़ कर खाने के लिए पहली ही पात में बैठा लिया। "पहले बच्चों और बूढों को भोजन करने दें फिर , आपलोग भोजन पर बैठिएगा "वो युवती वहाँ आकर बोली। "नहीं बेटी जो बैठ गए उन्हें क्यूँ उठाना", युवती की बात पर एक वृद्ध ने बोला। पर तब तक शशांक विकास का हाथ पकड़ कर खड़ा हो गया था। शशांक ने खुद से कहा,"ये तुम्हारा उत्सव है और मैं भिखारी हूँ जब तुम चाहोगी तभी मुझे भोजन मिलेगा" शाम को भोजन करने के बाद शशांक मंदिर में ही बैठा रहा, उसे यहाँ से जाने का मन नहीं हो रहा था। कुछ देर के बाद उसने युवती व अन्य लोगों को हलवाई के साथ कुछ चर्चा करते देखा, युवती कुछ चिंतित जान पड़ रही थी,पास जाने पर पता चला कि रात को खीर बनेगी और दूध जिसे लेकर आना था उस व्यक्ति के घर कोई बीमार है तो वो दूध नहीं पहुँचा पाएगा, दूध लेने किसी को 40किलोमीटर पेंड्रा जाना पड़ेगा।

"आप लोग मान जाए तो हम लोग दूध लेकर आ जाते हैं "शशांक ने कहा।

"ठीक है "युवती ने कहा।

"हमारे पास मोटरसाइकिल है, दूध लेकर हम आ जाएंगे" शशांक ने कहा।

" आप लोग दूध लेकर थोड़ा जल्दी आने का प्रयास करें, रात्रि के पहले प्रहर तक खीर बन के तैयार हो जानी चाहिए।"

" बड़ी मतलबी है ये लड़की तो" मोटरसाइकिल चलाते हुए रास्ते में विकास ने कहा।

"अच्छी लड़की है", शशांक ने जवाब दिया।

"अच्छी है, देख नहीं रहे कैसे आदेश दे रही है, वो तो औपचारिकता के लिए भी नहीं बोली कि आप लोग को इतने दूर जाने में परेशानी होगी।" विकास ने कहा।

" वो आदेश दे सकती है भाई, वो स्वामिनी है " शशांक के मुख से अनायास ही निकल गया।

"कपिल धारा झरना भी नहीं देख पाए।" विकास ने आगे कहा।

रात्रि 8.30 तक दोनों मित्र दूध ले कर आ गए। " थोड़ा देर से सही पर आप दोनों की वजह से अब खीर बन जाएगी, "हलवाई ने कहा। कल सुबह फिर से पूजा एवं हवन के बाद फिर भंडारे का आयोजन होगा, खीर रात भर चाँद की रोशनी से दिव्य होती रहेगी

भिन्न प्रदेशों की एक सामान्य भाषा बनने का सम्मान हिंदी को ही मिलना चाहिए –डॉ. रामकृष्ण भंडारकर

और सुबह भंडारे में भोजन के साथ ये खीर परोसी जाएगी। "आज यहीं सोने का विचार है या अपने होटल चलोगे" विकास ने कुछ समय उपरांत कहा। दोनों मित्र फिर मंदिर से निकल गए।

"ये मोटरसाइकिल किधर ले जा रहे हो" गलत दिशा में मोटरसाइकिल ले जाने पर विकास ने कहा। "कपिल धारा झरने की ओर, तुम्हे देखना था न " शशांक ने कहा।

"रात के 11 बजे जंगल के बीच झरना कौन देखता है, मरना है तो मुझे साथ क्यूँ ले जा रहे हो" विकास खीझ कर बोला। "जो तुम आज देखोगे वो कभी भूल नहीं पाओगे" शशांक ने मुस्कराते हुए कहा। "जो आज देख रहा हूँ वो भी कहाँ भूलने वाला हूँ" विकास ने कहा। रात्रि के दूसरे प्रहर, उनकी मोटरसाइकिल कपिल धारा झरने के समीप रुकी, दोनों मित्र पतले रास्ते से पदयात्रा करते कपिल धारा के समीप पहुंच गए।

दृश्य अलौकिक था दोनों तरफ ऊँची मेकल की पहाड़ियों के बीच नर्मदा का सुंदर झरना गिर रहा था, ऊपर शरद पूर्णिमा का 16 कलाओं से पूर्ण चंदा पूरे वैभव के साथ जंगल पर सफेद चाँदनी उड़ेल रहा था। दोनों मित्र ये दृश्य देख मंत्रमुग्ध थे।

"सुना है थोड़ी दूरी पर एक और झरना है" विकास ने कहा।

शशांक दिन की घटनाओं में खोया रहा, कौन है ये लड़की, क्यूँ है ये विलासिता, क्यूँ ये रूप है।

सूरज की पहली किरण के साथ दोनों मित्र अपने होटल के कमरे पर पहुँचते हैं। विकास रात को नींद ठीक से न होने के कारण तुरंत बिस्तर पर जा कर सो गया। पर शशांक को तो वापस जाना था, कोई मोह उसे बांध रहा था। जल्दी तैयार हो कर शशांक आश्रम में पहुँचा। आज के यज्ञ की तैयारी चल रही थी, शशांक भी तैयारियों में शामिल हो गया। यज्ञ समाप्त हुआ, लोग भंडारे के लिए बैठने लगे। शशांक भी सबको भोजन परोसने लगा, शाम कब हुई उसे पता नहीं चला, विकास भी शाम तक वहां आ गया था। आयोजन पूरा हुआ तब तक अंधेरा हो चुका था। शशांक अकेला मंदिर के बाहर एक बेंच पर बैठा रहा। रात्रि 9 बजे विकास आया और शशांक को होटल ले गया।

"नाम क्या है ?" विकास ने पूछा।

"ज्योत्सना" शशांक ने उत्तर दिया।

" कुछ बात हुई ?" विकास ने आगे पूछा।

"थोड़ी बात हो पाई थी" शशांक ने उत्तर दिया।

"वो तुम्हारा नाम जानती है" विकास ने पूछा।

"नहीं",

"पूरे दिन उसके आयोजन में मदद करते रहे, धन्यवाद भी नहीं बोली ?" विकास ने पूछा।

"नहीं"।

"मैने कल भी कहा था, अहंकारी है" विकास ने कहा।

"उस पर अहंकार भी जचेगा" शशांक ने अनायास ही कहा।

"मैं प्रेम समझूं ?" विकास ने पूछा।

" फिर उससे मिलना न हो सका तो " विकास ने पूछा।

" तो प्रेम अधूरा ही सही" शशांक ने कहा।

"अधूरा प्रेम जीवन भर रोमांच कायम रखता है" विकास ने हंसते हुए कहा।

एक माह बीत गया । शशांक अपनी कोचिंग संस्था में बच्चों को पढ़ा रहा था तभी विकास का फोन आया। " जल्दी से गौरी घाट आ जाओ" , विकास की आवाज में उत्साह था।

" क्या हुआ " शशांक ने पूछा।

"तुम्हारी मतलबी महारानी यहाँ आई हुई है", विकास ने कहा।

शशांक अपनी मोटरसाइकल से तुरंत गौरीघाट पहुंचा। नर्मदा आरती शुरू हो चुकी थी, वातावरण में आरती की आवाज गूंज रही थी। ऊपर कार्तिक पूर्णिमा का चाँद चमक रहा था। आज देव दीवाली थी। घाट रोशनी से जगमगा रहा था, नवंबर माह की सुहानी ठंडी हवाएं बह रहीं थीं। और शंशाक ने ज्योत्सना को देखा। आसमानी रंग के सूट पर भूरे रंग का कोट पहने ज्योत्सना घाट की सीढ़ियों बैठी थी।

शशांक उसे दूर से देखता रहा, आरती खत्म हुई तो लोगों की हलचल शुरू हो गई , शशांक तेजी से ज्योत्सना की तरफ भागा , पर वो भीड़ में नजर नहीं आ रही थी। बहुत ढूंढने के बाद भी ज्योत्स्ना नहीं मिल पाई। दोनों दोस्त नदी के पास जाकर बैठ गए।

"तुम्हारी किस्मत में महारानी नहीं लिखी", विकास ने कहा।

"भिखारी की किस्मत में महारानी नहीं होती" मायूसी के साथ शशांक ने बोला। कुछ समय पश्चात शशांक अपने घर जाने के लिए उठा, घाट की सीढ़ियों चढ़ रहा था कि उसे किसी ने पुकारा।

"आपने शायद मुझे नहीं पहचाना, मैं ज्योत्सना, अमरकंटक में "

"जी, मैं आपको जानता हूं "शशांक ने कहा।

"यहाँ किस प्रयोजन से आए ?

अच्छा लगा आप मिल गए, मेरे मन का बोझ हलका हो जाएगा" ज्योत्सना ने आगे कहा।

" बोझ तो मेरा भी कुछ कम होता प्रतीत हो रहा" शशांक ने कहा।

"कल मिलते है, यहीं पर शाम 7 बजे, आज देर हो रही है घर जाना होगा मुझे" ज्योत्सना ने कहा।

"जी, मैं यहीं घाट पर मिलूंगा" शशांक ने कहा।

"तो मतलबी महारानी कल मिलेगी तुमसे, फिर से कोई काम कराना होगा" विकास ने शशांक से फोन पर बात करते हुए कहा।

"मैं उसके क्या काम आऊँगा और वो चाहे तो मिले, वो चाहे तो ना मिले" शशांक ने कहा। अगले दिन शाम शशांक गौरीघाट पर ज्योत्सना का इंतजार कर रहा था।

"आप तो समय के पाबंद है, मुझसे पहले पहुँच गए" पास आकर सीढ़ियों पर बैठते हुए ज्योत्सना ने कहा।

शशांक–पहले दिन ही देर से पहुँचता तो आप क्या सोचती, मेरी क्या धारणा बनती आपके मन में।

ज्योत्सना–अच्छा जी, धारणा का बड़ा ख्याल है आपको, पर उस दिन तो आप पहली पात में बैठ गए थे, शायद धारणा का ख्याल भूल गए थे उस समय। बोल कर वो थोड़ा हंस देती है।

शशांक–उस दिन धारणा का ख्याल करता तो संभवतः आप से आज मिलना न होता।

ज्योत्सना–संभवतः, धारणा की महिमा है।

बोल कर वो फिर मुस्करा दी।

शशांक(मन में सोचता है) – महिमा तो सिर्फ तुम्हारी है ।

शशांक – यथार्थ से ही डर लगता है।

ज्योत्सना – ठीक कहा आपने, कल्पना का सहारा न हो तो यथार्थ तो हमें जीने ना दे शशांक।(बोलकर गंभीर हो जाती है)

शशांक–आपको मेरा नाम कैसे पता है ?

ज्योत्सना– नाम क्यूँ नहीं पता होगा, आपने मेरी कितनी मदद की थी। अमरकंटक में और मैं आपको धन्यवाद भी नहीं बोल पाई।

शशांक– मेरा दोस्त कहता है आप बड़ी मतलबी हैं ।

ज्योत्सना – और आपको क्या लगता है ?

शशांक – मैं किसी के व्यवहार पर इतना नहीं सोचता ।

ज्योत्सना– तब तो अच्छा है, मैं तो सोच रही थी आप मुझे गलत ही समझ रहे होंगे।

शशांक– आप क्या सिर्फ धन्यवाद कहने के लिए मिलना चाहती थीं ? ज्योत्सना– छोटा सा उत्तर तो ये होगा कि मैं आपसे सिर्फ धन्यवाद कहने के लिए नहीं मिलना चाहती थी।

शशांक– आपके पास समय हो तो कल मिल सकते हैं ?

ज्योत्सना – कोई विशेष कार्य से मिलना है तो मिलूंगी।

शशांक– बहुत विशेष कार्य है ज्योत्सना जी।

ज्योत्सना– मैं सदर बाजार में मिलती हूँ, कल 4 बजे वहीं से आप मुझे ले लीजिए। अगले दिन शाम को तय समय अनुसार दोनों सदर में मिलते हैं। शशांक की मोटरसाइकिल से दोनों भेड़ाघाट को निकल जाते हैं। दोनों भेड़ाघाट पहुंच कर नर्मदा किनारे कहीं बैठ जाते हैं।

ज्योत्सना–अमरकंटक घूमने गए थे आप या और कोई कार्य था ?

शशांक– घूमने ही गया था, जंगलों और पहाड़ों में भटकना अच्छा लगता है मुझे।

ज्योत्सना–और मंदिर के भंडारे में मैने आपको काम पर लगा दिया, आपका घूमना तो हो नहीं पाया होगा।

शशांक– संभवतः ईश्वर की इच्छा थी ।

ज्योत्सना– नदियां पहाड़ जंगल मुझे भी पसंद है।

शशांक– कभी पूनम के चाँद की रोशनी में नहाए जंगल देखे हैं आपने।

ज्योत्सना–मैं तो जीवन के बहाव मे बही जा रही हूँ ,पर देखना चाहती हूँ कि कैसा दिखता होगा ये नजारा, अदभुत होगा।

फिर शशांक ज्योत्सना को कपिलधारा जल प्राप्त की रात्रि वाली फोटो अपने फोन में दिखाता है। देर तक सभी तस्वीरें देखती रहती है। ज्योत्सना– तस्वीरों को ही देख सम्मोहित हो रही हूँ, असल नजारा देखने पर शायद होश चले जाएं।

पता नहीं कब ये नजारा देख पाऊँगी।उस समय मैं आपको जानती होती तो मैं भी ये दृश्य देखने जरूर जाती। पर मेरी किस्मत ।

अच्छा शशांक, रात में उस जंगल में आपको डर नहीं लगा।

शशांक– डर तो तब लगता जब मैं पूरे होश में होता, उस समय मैं एक अलग ही नशे में डूबा हुआ था।

ज्योत्सना – शराब का नशा ?

शशांक– शायद उससे भी बड़ा नशा।

ज्योत्सना– तो क्या भांग या अफीम खा रखी थी आपने ?

कह कर वो हंस देती है।

शशांक– आप हंस सकती हैं मेरे पागलपन पर, कोई भी हंसता।

ज्योत्सना– वो नशा उतरा कि नहीं आपका, या अब तक, कभी मुझे भी ऐसी रात में चाँद और चाँदनी का मिलन दिखाने ले चलिए। पर मुझे कौन सा नशा करना होगा डर को निकालने के लिए ? मैं तो शराब भी नहीं पीती।

शशांक– मैं जिस नशे में चला गया उस नशे की धुन आप क्या जानो, आपको तो होश के साथ ही वहाँ जाना होगा।

अगले माह दिसंबर में मार्गशीर्ष का पूरा चाँद निकलेगा। तब हम उसे देखने जा सकते है।

ज्योत्सना–अब तो मार्गशीर्ष का चंदा ही कोई मार्ग प्रशस्त करेगा।

दोनों का मिलना होता रहा, नर्मदा के किनारे अक्सर उनके साथ होने के गवाह बनने लगे।

ठंड के बाद बसंत और फिर गर्मियां भी बीत गईं, बारिश का मौसम आ गया था। दोनों के बीच आत्मीयता तो जाग रही थी पर शशांक को हीनता का एहसास बांधे हुए रहता था। और ज्योत्सना

जो जीवन के प्रवाह में बस बहते जाना जानती थी, वो भी अब खुद को कई बार असमंजस में पाती थी, जानती नहीं थी क्या करें। शशांक के लिए प्रेम तो था पर भक्ति भी थी।

ज्योत्सना शशांक के मन के भाव को जानती थी, पर वो भी अभी तक अपने प्रेम के भाव को खुल कर जाहिर नहीं करती थी। बारिश कुछ दिनों से थमी हुई थी अगस्त का महीना था, दोनों घाट पर बैठे थे।

ज्योत्सना-शशांक तुम भी सोचते होगे कि कहाँ से मैं तुम्हारे जीवन में उथल-पुथल मचाने आ गई, सादा-सा जीवन जटिल बना दिया मैने।

शशांक-ज्योत्सना पर मै कभी नहीं चाहता तुम्हारा विशाल वैभवशाली जीवन मेरी वजह से सादा हो जाए।

ज्योत्सना-आज तुमसे लड़ाई करने का जी कर रहा है। तुम आज तक मुझे चाँदनी रात वाला जंगल नहीं दिखा पाए।

शशांक- लगता है मैं कभी दिखा भी नहीं पाऊँगा। पर तुम देखना जरूर, वो अदभुत चाँदनी रात। शशांक नहीं होगा तो क्या कोई और होगा, तुम्हारे ही जैसा .... ।

ज्योत्सना- शशांक बाबू लगता है आपको भक्ती अधिक प्रिय है।

शशांक -सरोवरों के भाग्य में नदियों से मिलना नहीं होता, वो तो ठहरे रहते है और आसमान से कुछ बूंदों के आस में रहते है, जिससे वे जीवित रह सकें। नदियों जैसा बहना, वो वैभव कहां और फिर नदियां तो विशाल सागरों से ही मिलने को ही जन्म लेती हैं। सरोवर तो नदी की भक्ति ही कर सकता है।

ज्योत्सना- तो क्या ये प्रेम अधूरा ही रह जाएगा ?

शशांक- अधूरा प्रेम जीवन भर रोमांच देता है। किसी ने कहा था। अक्टूबर का महीना था दोनों नर्मदा किनारे घूघरा घाट पर बैठे थे दो दिन बाद शरद पूर्णिमा थी।

इस वर्ष भी ज्योत्सना का परिवार अमरकंटक में उसी आश्रम मंदिर में दो दिन का यज्ञ और भंडारा आयोजित कर रहा था। कल सुबह ज्योत्सना को अपने परिवार के साथ अमरकंटक जाना था।

अगले दिन दूसरे प्रहर तक ज्योत्सना अपने परिवार के साथ अमरकंटक पहुँच जाती है, उसका परिवार और अन्य रिश्तेदार उसी विशाल आश्रम में ठहरते हैं जहां कल आयोजन होना है। शाम तक शशांक भी अपनी मोटरसाइकल पर अमरकंटक पहुँचता है। अगले दिन शरद पूर्णिमा है।

आज फिर से वही दिन था जब एक वर्ष पूर्व शशांक के हृदय में भक्ति और प्रेम दोनों उपजे थे। शरद पूर्णिमा की सुंदर सुबह, मंदिर में पूजा शुरू हो चुकी थी। ज्योत्सना अपने परिवार के साथ पूजा में बैठ चुकी थी, पुरोहित सुंदर मंत्रोच्चार कर रहे थे।

पूजा के बाद भंडारा शुरू हुआ। ज्योत्सना का उत्साह पिछले वर्ष जैसा नहीं था मन पर बोझ था, पर वो पूरे आयोजन को पूरी निष्ठा से सफल बनाने में लगी हुई थी। पूरे दिन उसके आँख आंसुओं से नम थे। शशांक वहीं मंदिर में बैठा रहा, एक वर्ष पूर्व की स्मृतियां उसके आँखों के सामने थी, आँखों से आंसू बह रहे थे, आज उसे लग रहा था की एक वर्ष पहले शुरू हुई कठोर साधना आज पूरी होने वाली है। अब वो मुक्ति पा जाएगा।

रात्रि का भजन कीर्तन शुरू हो चुका था। कुछ देर बाद एक साध्वी मीराबाई का भजन गाना शुरू करती है।

"सांसो की माला पे सिमरूं मैं पिया का नाम।

प्रीतम तुमसे ही सब है अब अपना राज सुहाग

तुम नाही तो कछु नाही तुम मिले जागे भाग।।

प्रीतम का कछु दोष नहीं है वो तो है निर्दोष

अपने आप से बातें करके हो गयी मैं बदनाम।।"

ज्योत्सना के लिए अब खुद को रोकना मुश्किल होता है, वो तेजी से निकलती हुई आश्रम के बाहर सड़क पर आ जाती है, शशांक भी उसके पीछे आश्रम से बाहर आ जाता है।

रात के 11.30 का समय हो गया था। नम आँखों के साथ ज्योत्सना बोलती है "तुम अपना वादा पूरा करो, ले चलो मुझे उस जगह, अब तो मुझे भी वो नशा हो गया है, अब तो जा सकती हूँ मैं वहाँ ?"

" ले तो जाऊँ मैं पर रात में उस जंगल में जाना बहुत खतरा है इसमें, तुम्हें कुछ हो गया तो " शशांक ने सिसकते हुए कहा।

"शायद तुम्हारा नशा उतर गया है, पर मुझे कोई डर नहीं, मर ही जाऊँगी ना, तुम्हारे साथ उस अदभुत नजारे में मर भी गई तो परवाह नहीं।" थोड़े गुस्से में ज्योत्सना ने कहा।

"मेरा नशा तो अब सांसों के साथ ही खत्म होगा, पर मेरी बात मान लो दिन में चलना वहां " शशांक सर झुका कर धीमे से बोलता है।

"तुम चलते हो कि मैं अकेले चली जाऊँ " फिर से ज्योत्सना ने कहा। "चलो" कहकर शशांक अपनी मोटरसाइकल चालू करता है। सर्द हवाओं के बीच दोनों धीरे धीरे नर्मदा की धारा के बगल से बनी सड़क पर कपिलधारा झरने की तरफ बढ़ते जा रहे थे। दोनों चुप थे पर धड़कनें बहुत तेज चल रही थी। सड़क जहाँ खत्म होती है वहाँ मोटरसाइकिल खड़ी कर पगडंडी से चलते हुए दोनों झरने के ऊपर पहुँच जाते हैं। पूरा जंगल शांत था, बस गिरते पानी की आवाज आ रही थी। दोनों तरफ ऊँची-ऊँची पहाड़ियों के बीच नर्मदा बहती जा रही थीं, सामने आकाश में पूरा चाँद मुस्करा रहा था। पूरी प्रकृति सफेद रोशनी में नहा रही थी। प्रेम के नशे में डूबी ज्योत्सना इस दृश्य से मंत्रमुग्ध हो रही थी, यहीं आने के लिए उसका जन्म हुआ है, बस यही तो समय है जीने और मरने के लिए।

वो एक पत्थर के सहारे बैठ जाती है, शशांक भी पास में बैठ जाता है। शशांक ठंड से बचने के लिए लकड़ियां इकट्ठी कर आग जला लेता है। दोनों के आँसू आज रुक नहीं रहे थे। "इस नदी को बस सरोवर तक ही जाना है, अपने मानसरोवर तक पहुंच गई है ये नदी, अब यात्रा पूरी हुई" रोते हुए ज्योत्सना ने कहा।

" शशांक का अर्थ होता है चाँद और ज्योत्सना का चाँदनी, आज चाँद और चाँदनी के मिलन के इस उत्सव में ज्योत्सना का भी शशांक से मिलन हो रहा। और तुम्हें मैं जीवन भर अधूरे प्रेम के रोमांच के साथ तो नहीं छोड़ सकती"।

"अब यहाँ मर भी जाऊ तो भाग्यवान ही कहलाऊँगी, बस एक कमी है , वो पूरी कर दो" कह कर ज्योत्सना ने मंदिर से लाई हुआ सिंदूर की डिब्बी खोल कर बोली।

" अब मेरा श्रृंगार पूरा कर दो ,मुझे सुहागन कर दो,"

"अग्नि, चंद्रमा, नर्मदा और प्रकृति मेरे साक्षी रहेंगे"

शशांक ने हाथ बढ़ा कर सिंदूर से ज्योत्सना की माँग भर दी।

"अब मैं सुहागन ही मरूंगी" कह कर शशांक के गले लग कर रोती रही। दूर मंदिर के भजन चल रहा था।

"प्रेम के रंग में ऐसी डूबी बन गया एक ही रूप,
प्रेम की माला जपते-जपते आप बनी मैं श्याम।
ढांक लिया पलकों में तुझको बंद कर लिए नैन
तू मुझको मैं तुझको देखूं गैरों का क्या काम।।"

सुबह की पहली रोशनी के साथ दोनों आश्रम की तरफ चल देते हैं, एक सुहागन अपने पिया के साथ मंदिर में प्रवेश करती है।

विश्व प्रकाश
सीनियर सेक्शन इंजीनियर (एसएंडटी)
जबलपुर मंडल, पमरे
मो.-9752418847

कविता

वह शख्स

वह शख्श, वैसा ही रहा।
जैसा कि होना चाहिये था।
जैसे हो कोई चट्टान।

लड़ते रहा सदा ही,
मुश्किलों के झंझवातों से।
सहता रहा प्रताड़नाएँ
जीवन भर ही तमाम।

पिघलता रहा करुणा के ताप से,
हिमालय की बर्फ की तरह।
बढ़ता गया क्षितिज तक,
लक्ष्य के पीछे।
और महकती रही उसकी पदचाप,
बन गयी एक पहचान।

पराए गम सहज ही,
छलक आते है उसकी आँखों में,
और बन जाते अभियान।

रोज बनता है बिगड़ता है, फिर हुंकार भरता है।
फिर भी कभी वो हारा नहीं, किसी को पुकारा नहीं ।

कितना है संघर्ष उसूलों-हक की लड़ाई में।
तभी तो, विडंबनाओं के संताप से,
सुरक्षित है अपना वजूद।
और हम जी रहे है सिर उठा के
उस चट्टान के पीछे।

राकेश कुमार मालवी 'प्रखर'
सीनियर सेक्शन इंजीनियर/टेली
भोपाल मंडल, पमरे
मो. 9752416821

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है। - राहुल सांस्कृत्यान

कविता

पश्चिम मध्य रेल - पर्यटन के झरोखे में

संस्कारधानी - जबलपुर

जबलपुर, विंध्य - सतपुड़ा की वादियों का छोर है।
आसपास प्रकृति की शांति और नर्मदा का शोर है।।
यहां सफेद संगमरमर पर गिरता धुंआधार जलप्रपात है।
नौका विहार को भेड़ा घाट और भक्ति को ग्वारी घाट है।।
चौसठ योगनी की योग शिक्षा है।
मदन महल का किला भी अच्छा है।।
संस्कृति से ओतप्रोत ये संस्कारधानी है।
इतिहास में भी इसका नहीं कोई सानी है।।
प्राकृतिक पचमढ़ी पहाड़ों की रानी है।
विशाल ऊंघते जंगलों की कहानी है।।
विंध्य के जंगल में घूमते सफेद चीते हैं।
बांधवगढ़ पेंच में दहाड़ सुन दिन बीते हैं।

झीलों की नगरी-भोपाल

ये है झीलों की सुंदर पर्यटक नगरी भोपाल।
महाराजा भोज का पुरातन नगर भोजपाल।।
बड़े ताल की सुंदर छटा,पर कम नहीं है छोटा ताल।
वन विहार और सैर सपाटा, लगते हैं बहुत कमाल।।
हो उत्कृष्ट नई विधान सभा, या हो सुंदर पुराना मिंटो हाल।
हो भारत भवन का रंगमंच, या हो रविन्द्र भवन का पंडाल।।
वो मानव संग्रहालय और ट्राइबल म्यूजियम की चौपाल।
हरे पेड़ों की घनी छांव और लिंक रोड की सरपट चाल।।
बिरला मंदिर का आध्यात्म या मनुभावन का शांति काल।
केरवा कलियासोत हलाली और भी हैं कई बांध विशाल।।
खरीददारी को सर्वोत्तम है, न्यूमार्केट और चौक बाजार।
एमपी नगर में है सब प्रकार का, व्यापार और कारोबार।।
अरेरा श्यामला हिल्स की हरियाली, है भोपाल की जान।
वो भोपाली बोली और तहजीब, है गंगा जमुनी पहचान।।
भोजसेतू, वीआईपी रोड और शौर्य पार्क की अनोखी शान।
विश्वविख्यात ताजुल मस्जिद, प्राचीन भोजपुर मंदिर महान।।
विश्व स्तरीय रानी कमलापति बना भोपाल की पहिचान।
मेट्रो ने बढ़ाई उन्नत, विकसित और समृद्ध भोपाल की शान।।

शिक्षा नगरी- कोटा

कोटा का कोचिंग और शिक्षा में अपना नाम व कोटा है।
यहां जो इमानदारी से पढ़ने गया वो खाली नहीं लौटा है।।
चंबल रिवरफ्रेंट गार्डन और सेवन वंडर है।
बैराज, झील झरना और सुंदर जगमंदिर है।।
रेल का पर्यटन विकास में है अहम्योगदान।
करती सबको आरामदायक सफर प्रदान।।

राकेश कुमार रजक
सीनियर सेक्शन इंजीनियर
भोपाल मंडल,पमरे
मो. 9893251546

प्रांतीय ईर्ष्या को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती। - नेताजी सुभाषचंद्र बोस

कविता

तेरा-मेरा बहुत हो चुका

तेरा-मेरा बहुत हो चुका
अब तो बन जाओ इंसान
विश्व-बंधुत्व, हमारा नारा
लोकतंत्र अपनी पहचान

मिलजुल कर रहना ही अच्छा
एक सभी हम, कहना अच्छा
इक-दूजे का बनो सहारा
मानवता ही धरम हमारा
साथ चलोगे-साथ बढ़ोगे
तब ही बनेगा, देश महान
तेरा-मेरा बहुत हो चुका
अब तो बन जाओ इंसान

हिंसा - द्वेष , लड़ाई-झगडे
बता किसी ने, क्या है पाया
साथ वहीं जाएगा, सुन लो
प्रेम से तुमने, जो भी कमाया
सुख-दु:ख में जो साथ चला है
वक्त करे, उनका गुणगान
तेरा-मेरा, बहुत हो चुका
अब तो बन जाओ इंसान

मंदिर-मस्जिद , ईश्वर के घर
सबके लिए, खुले हों ये दर
एक बराबर, जब हम सारे
बता तुम्हें, किससे डर प्यारे
कोई धर्म नहीं, खतरे में
सबका है, ये हिन्दुस्तान
तेरा-मेरा, बहुत हो चुका
अब तो बन जाओ इंसान।

सलीम 'स्वतंत्र'
लोको पायलट
कोटा मंडल, पमरे
मो. 9001015278

काठ की माया

शिशु के जन्म से लेकर, देह के अंतिम संस्कार तक
जीवन के हर चरण में सुख-सुविधा के दरकार तक
आजीवन साथ लकड़ी का जैसे साथ निभाये हमसाया
जनम से लेकर मरण तक, कई रूप दिखाये काठ की माया।

पलंग पर शिशु को जन्म देकर भूल जाए माँ पीड़ा सारी
पालने में झूलते हुए पूरे घर गूंजे बच्चे की किलकारी
तीन पहिये वाली लकड़ी की गाड़ी घूम-घूम कर खूब चलाया
प्रथम चरण शुरू हुआ जीवन का, साथ चले काठ की माया।

माँ-बाप की शिक्षा चलती रहे और विद्यालय भी जाए साथ में
स्लेट पट्टी में लिखे-मिटाये, गुरु की छड़ी भी खाए हाथ में
लकड़ी की कुर्सी-मेज से होकर स्कूल-कॉलेज से निकल आया
बचपन से लेकर जवानी तक, क्या खूब देखी काठ की माया।

भोजन और पकवान लकड़ी के चूल्हे में जब माँ बनाती थी
पटे पर बिठाकर हम सबको कितने चाव से हमें खिलाती थी
देख टीवी, मोबाइल चलाते अब डायनिंग टेबल पर खाना आया
कदर नहीं मेहनत और स्वाद की, ये कैसी काठ की माया।

सजा मंडप विवाह का हो या लकड़ियां हो अग्नि हवन की
दुल्हन की पालकी डोली हो या शय्या हो रिश्ते पावन की
खिड़की, दरवाजों से घिरे भवन में सोफा, टेबल,अलमारी सजाया
चल पड़ा सफर ये रिश्तों का, साथ में चल पड़ी काठ की माया।

बचपन से होकर चला सफर जो, बुढ़ापे की परीक्षा आई कड़ी
आने-जाने, उठने-बैठने का सहारा तो अब बस रह गई छड़ी
आराम कुर्सी पर उंघते-उंघते एक दिन काठ सी रह गई काया
देह निर्जीव लकड़ी सी हो गई, अल्प विराम पर काठ की माया।

परिवार, संगी साथी, रिश्ते नाते, पीछे छूट गये
काठ का उल्लू बना रहा, रिश्ते क्या काठ से टूट गये
जनाजा हो या भूसे-बांस, लकड़ियों ने चिता में भी साथ निभाया
मिट्टी में मिल गये प्राण, पूर्ण विराम पर आई काठ की माया।

कौशिक सेनगुप्ता
कार्यालय अधीक्षक,सतर्कता विभाग
मुख्यालय, जबलपुर, पमरे
मो. 9425412117

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि हम अपनी सारी मानसिक शक्ति हिंदी भाषा के अध्ययन में लगाएं।
– आचार्य विनोबा भावे

छायाचित्र - वीथिका

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 68 वीं तिमाही बैठक का आयोजन

श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, समिति अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, पमरे का पौधा भेंट कर स्वागत करते हुए श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुराधि, पमरे

क्षे.रा.भा.कार्या.समिति की 68 वीं बैठक में स्वागत भाषण देते हुए श्री मनोज कुमार गुप्ता, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्र.मु.सा.प्र., पमरे

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 68 वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, समिति अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, पमरे, उपस्थित समिति सदस्य एवं विभाग प्रमुख तथा अन्य प्रतिनिधि अधिकारीगण

मंडलों एवं कारखानों से ऑनलाइन जुड़े समिति सदस्यों से राजभाषा प्रगति पर चर्चा करते हुए श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, समिति अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, पमरे

छायाचित्र - वीथिका

69 वां रेल सप्ताह समारोह

69 वां रेल सप्ताह समारोह का शुभारंभ करते हुए श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय महाप्रबंधक, पमरे एवं म.कर्म.क.स. की पदाधिकारी एवं अन्य अधिकारीगण

69 वां रेल सप्ताह समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय महाप्रबंधक, पमरे एवं उपस्थित अन्य अधिकारीगण

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय महाप्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे

समारोह में उपस्थित प्रमुख मुख्य विभागाध्यक्ष एवं अन्य अधिकारी गण पश्चिम मध्य रेलवे

रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति देते हुए सांस्कृतिक अकादमी के कलाकार

कार्यक्रम का आनंद लेते हुए उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

छायाचित्र - वीथिका

69 वां रेल सप्ताह समारोह

छायाचित्र - वीथिका

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हिंदी कार्यशाला में स्वागत भाषण देते हुए
श्री प्रज्ञेश निंबालकर, उप मुराधि एवं उप मुख्य संरक्षा अधिकारी, पमरे

सिगलन एवं दूरसंचार विभाग, मुख्यालय, पमरे हेतु आयोजित
हिंदी कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागी अधिकारी एवं कर्मचारीगण

हिंदी कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए उपस्थित प्रतिभागी अधिकारी एवं कर्मचारीगण

हिंदी कार्यशाला के समापन अवसर पर प्रतिभागी प्रशिक्षणार्थियों को सहभागिता प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए
श्री संजीव तिवारी, मुख्य संकेत एवं दूरसंचार इंजीनियर (योजना एवं अभिकल्प) पमरे, जबलपुर

छायाचित्र - वीथिका

साहित्यकार जयंती समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन

साहित्यकार जयंती समारोह एवं कवि सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए
श्री अनिल कुमार कालरा, मंडल रेल प्रबंधक, कोटा, पमरे

समारोह को संबोधित करते हुए
श्री अनिल कुमार कालरा, मंडल रेल प्रबंधक, कोटा, पमरे

माल डिब्बा मरम्मत कारखाना, कोटा में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में प्रस्तुति देते हुए कविगण

माल डिब्बा मरम्मत कारखाना, कोटा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में
आमंत्रित कविगणों के साथ श्री सुधीर सरवरिया, मुख्य कारखाना प्रबंधक, माडिमका, कोटा, पमरे

छायाचित्र - वीथिका

राजभाषा गतिविधियाँ

राजभाषा दैनंदिनी-2025 का विमोचन करते हुए श्री देवाशीष त्रिपाठी, मं.रे.प्र., एवं श्रीमती रश्मि दिवाकर, अमुराधि एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक, भोपाल मंडल

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उद्बोधन देते हुए श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव, वरि.मं. यां. इंजी., डीजल लोको शेड, इटारसी

रेल विद्युतीकरण की 100वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में मंडल कार्यालय, भोपाल में राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री प्रफुल्ल बी. कुहाड़े, मुख्य कारखाना प्रबंधक, सडिपुका, भोपाल

राजभाषा दैनंदिनी-2025 का विमोचन करते हुए श्री प्रफुल्ल बी. कुहाड़े, मुख्य कारखाना प्रबंधक, सडिपुका, भोपाल एवं अन्य अधिकारी गण

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1.क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक्स उपकरणों की	100%	100%	100%
11	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बार्डो आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13	(I) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कायालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(II) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(III) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित निरीक्षण अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छ:माही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15	कोड,मैनुअल,फार्म,प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंको/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30% (न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है क क्षेत्र में कुल कार्य का 40% ख क्षेत्र में 25% ग क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।	20%

Designed & Printed by - Up To Date Print Media, Jabalpur. Mob-7470587143,E-mail-up2date.print@gmail.com